UNIVERSAL LIBRARY
OU_182566
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 82/S 52 B Accession No. H 284

Author

Title

This book should be returned on or before the date last marked below.

हिन्दी शेक्सपियर

भूलभुलैयां

शेक्सपियर

अनुवादक: डा० रांगेय राघव

सर्वोदय साहित्य मंदिर,
कोठी, (बसस्टेण्ड,) हैदराबाद ८.
राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

मूल्य : दो रुपये
प्रथम संस्करण : जुलाई, १९५८
आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफ़ोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से आठ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवत: उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी ऐलिज़ाबेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन जाकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्राय: समकालीन यह कवि यहीं आकर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नहीं पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्तप्राय: हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएं अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीज़र, ऑथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दुःखान्त), ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एड्‌ अबाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफ़ान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं। प्रायः उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओं को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते हैं। जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का अनुवाद नहीं है वह भाषाओं में कभी नहीं गिनी जा सकती।

भूमिका

शेक्सपियर के सुखांत नाटकों में 'भूलभुलैयाँ' एक बड़ी मज़ेदार रचना है। पहली बार जब इसे खेला गया तो संभ्रांत लोग इसलिए नाराज़ होकर उठकर चले गये कि उनकी कुछ समझ में नहीं आया। इसमें एक ही शक्ल सूरत के दो जुड़वाँ भाई हैं, और उनके दोनों नौकर भी वैसे ही हैं। अतः कथा में वे यही नहीं जाँच सके कि कौन-सा भाई कब किससे मिला और इसलिए रंगशाला में खूब कोलाहल हुआ। यह घटना १५९४-९५ की है।

फ्रांसिस मेरेस ने इस नाटक का नाम शेक्सपियर के अन्य ग्यारह नाटकों के साथ पैलेडिस टेनिया में उल्लिखित किया है। उसका समय है १५९८। इसका अर्थ है, यह पहले ही लिखा गया था।

नाटक की कथा का स्रोत प्लौटस के सुखांत नाटक—मेनेक्मी से लिया गया है। हो सकता है उसी ने शेक्सपियर से यह कथा ले ली हो। इस पर निर्विवाद कुछ नहीं कहा जा सकता।

कथा यद्यपि बहुत ही सरल है, किंतु कौशल है इसकी बुनावट में। और यह काम वास्तव में काफ़ी चतुराई से किया गया है।

प्रस्तुत नाटक की विशेषताओं में एक यह है कि इसमें नाटककार ने स्त्री और पुरुष की एक नये प्रकार की स्पर्धा की भी झलक दी है, जिससे स्पष्ट होता है कि उस समय भी इस द्वन्द्व की ओर दृष्टि जाने लगी थी। दूसरी बात है इसका हास्य। यद्यपि

इसमें आवश्यकता से अधिक ऐसे शब्द हैं, जिनके दो अर्थ हैं, और जिससे उत्पन्न हास्य को उच्चकोटि का नहीं कहा जा सकता, परंतु इसमें ऐसी बड़ी अच्छी परिस्थितियाँ भी हैं, जो सच्चे हास्य को जन्म देती हैं। ऐसा ही है एक ऐन्टीफ़ोलस पर भूत आना। ज़बर्दस्ती जब उसका भूत उतारा जाता है, तब वह देखते ही बनता है।

चरित्रचित्रण की बात ली जाये तो दोनों बहिनों का ही चरित्र उठता है। और वे भी अधिक नहीं उठतीं। मूल कला है घटनाप्रधान कथावस्तु को जमाना और औत्सुक्य का निरन्तर निर्वाह। आगे क्या होने वाला है, यह जानने की निरंतर अभिलाषा बनी रहती है। पात्रों को उसने जादूगर की तरह नचाया है। किंतु जहां तक रस-सृष्टि का प्रश्न है, उसमें करुणा हमें उचित स्थान पर मिल ही जाती है। संवेदना जाग्रत करने की शेक्सपियर की अपार शक्ति देखने से हम यहाँ भी वंचित नहीं रहते। परंतु भावोत्तेजना का गाम्भीर्य हमें पूरे नाटक में कहीं भी नहीं मिलता, परंतु इसके लिए हमें कवि को दोष नहीं देना चाहिए, क्योंकि कमाल तो उसका यह है कि उसकी वर्ण्यवस्तु और पात्र अपने वातावरण की सीमा का कहीं भी उल्लंघन नहीं करते। शेक्सपियर जब रुलाना चाहता है, रुलाता है; जब हँसाना चाहता है, तब हँसाता है। अपने विषय पर इतना अधिकार हमें अन्यत्र लेखकों में शायद ही प्राप्त होगा। शेक्सपियर की प्रतिभा के विविध चमत्कारों में से एक इसको भी गिनना चाहिये।

वातावरण के नाम पर जो शेक्सपियर के बारे में प्रसिद्ध है कि वह कथा के अनुकूल एक 'हवा' बाँधता है, उसका यहाँ अभाव

पात्र-परिचय

सोलिनस : इफ़ेसस का ड्यूक

ईजियन : सायरेक्यूसा का व्यापारी

इफ़ेसस का ऐन्टीफ़ोलस, **सायरेक्यूसा का ऐन्टीफ़ोलस** } ईजियन और इमिलिया के पुत्र, जुड़वाँ भाई

इफ़ेसस का ड्रोमियो, **सायरेक्यूसा का ड्रोमियो** } दोनों ऐन्टीफ़ोलस भाइयों के सेवक, जुड़वाँ भाई।

बैल्थेज़ार : एक व्यापारी

ऐंजिलो : एक सुनार

व्यापारी : सायरेक्यूसा के ऐन्टीफ़ोलस का मित्र

एक दूसरा व्यापारी जिसका ऐंजिलो ऋणी है।

पिंच : एक अध्यापक और जादूगर

इमिलिया : ईत्रियन की पत्नी, इफ़ेसस में एक पुजारिन

एड्रियाना : इफ़ेसस के ऐन्टीफ़ोलस की पत्नी

ल्यूसियाना : उसकी बहिन

ल्यूसी : एड्रियाना की सेविका

एक वारवनिता

[जेलर, अधिकारी तथा अन्य सेवक]

*

पहला अंक

दृश्य १

[इफीसस के ड्यूक, सायरेक्यूसा के व्यापारी ईजियन, जेलर तथा अन्य सेवकों का प्रवेश]

व्यापारी : मेरे जीवन का अन्त कर दीजिये सोलिनस ! मृत्यु से सभी प्रकार के दुःख समाप्त हो जाते हैं।

ड्यूक : सायरेक्यूसा के व्यापारी ! अधिक कुछ मत कहो। मैं ऐसा पक्षपाती नहीं हूँ कि अपने यहाँ के नियमों का उल्लंघन कर दूँ। तुम्हारे ड्यूक ने जो क्रूरतापूर्ण व्यवहार हमारे देशवासी उन श्रेष्ठ व्यापारियों के साथ किया है, जिनके पास अपने जीवन की रक्षा करने के लिये पर्याप्त धन नहीं था और जिन्होंने अन्त में अपने रक्त से तुम्हारे देश के कठोर नियमों को रँगा, उसी से हमारे बीच पारस्परिक शत्रुता और विद्वेष बढ़ गया है और इसी कारण हमारी दृष्टि में अब भयभीत कर देने वाला आवेश है, दया नहीं। जब से तुम्हारे षड्यन्त्रपूर्ण देशवासियों तथा हमारे बीच यह आपसी घातक वैमनस्य चला है, उसी समय सायरेक्यूसा-वासियों तथा हमारे बीच यह निर्णय मान्य हुआ कि दोनों देशवासियों के बीच किसी प्रकार के आवागमन के सम्बन्ध नहीं रहेंगे। इतना ही नहीं, यदि इफीसस का कोई निवासी सायरे-क्यूसा के बाज़ार या मेले आदि में देखा गया और इसी तरह सायरेक्यूसा का कोई नागरिक इफीसस की खाड़ी में आया तो उसे मृत्यु-दण्ड दिया जायेगा। उसके सारे सामान को ड्यूक जब्त

कर लेगा और वह अपने सामान सहित तब तक मुक्ति नहीं पा सकेगा जब तक दण्डस्वरूप एक हज़ार 'मार्क' नहीं दे देगा। तुम्हारे सामान की अधिक से अधिक कीमत सौ 'मार्क' भी नहीं है, इसलिये नियमानुसार तुम्हें मृत्यु-दण्ड दिया जाता है।

व्यापारी : यदि आपका यही निर्णय है, तो यह भी मेरे लिये संतोष की बात है, क्योंकि इस तरह संध्या को डूबते सूर्य के साथ मेरे सारे दुःख भी समाप्त हो जायेंगे।

ड्यूक : लेकिन सायरेक्यूसा-निवासी ! संक्षेप में यह तो बताओ कि किस कारण से तुम अपने घर से चलकर यहाँ इफोसस में आये हो ?

व्यापारी : मैं अपने अकथनीय दुःखों की कथा कहूँ, इससे अधिक कठिन कार्य मेरे लिये और कोई नहीं हो सकता; फिर भी मैं, जितना मेरा दुःखी हृदय कहने देगा, अपनी करुण कहानी सुनाऊँगा जिससे दुनिया को यह तो पता लग जायेगा कि किसी अपराध के कारण मेरे जीवन का अन्त नहीं हुआ है बल्कि स्वाभाविक स्नेह ही इसका मूल कारण है। मेरा जन्म सायरेक्यूसा में हुआ था और वहीं एक स्त्री के साथ मेरा विवाह हुआ, जो मुझे पाकर अत्यंत प्रसन्न थी। काश, हमारा ऐसा बुरा भाग्य नहीं होता ! उस स्त्री के साथ मैं प्रसन्नतापूर्वक रहता था। व्यापार करने के लिये मैं काफ़ी माल लेकर समुद्री मार्ग से ईपीडैमियम जाता और उससे हमारी सम्पत्ति काफी बढ़ गई थी; इसी बीच मेरे दलाल की मृत्यु हो गयी और वह एकाएक सामान की ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर छोड़ गया, जिसके लिये मुझे अपनी प्राणप्रिया का मधुर सहवास छोड़कर जाना पड़ा। मुझे गये हुए छः महीने भी नहीं बीते थे उससे पहले ही मेरी प्रिया ने अन्य स्त्रियों की भाँति गर्भवती होने की असह्य पीड़ा सहते हुए भी

मेरे पास आने का निश्चय कर लिया और शीघ्र ही सुरक्षित रूप से वह मेरे पास आ पहुँची। कुछ दिन पश्चात् ही वह वहाँ दो सुन्दर पुत्रों की माँ बन गई और सबसे विचित्र बात यह थी कि दोनों के रूप में तनिक भी अन्तर नहीं था, केवल नामों के द्वारा ही उनकी पृथकता का ज्ञान हो सकता था। उसी समय, उसी सराय में एक निम्न वर्ग की स्त्री ने इसी तरह दो जुड़वाँ पुत्रों को जन्म दिया। चूँकि उनके माँ-बाप अत्यंत निर्धन थे इसलिये उन बच्चों को मैंने खरीद लिया और मेरे पुत्रों की सेवा करने के लिये मैंने उनका पालन-पोषण किया। मेरी पत्नी को अपने दोनों पुत्रों के ऊपर पूरा गर्व था। अब वह प्रतिदिन घर वापस चलने के लिये आग्रह करने लगी। अनिच्छा से मैंने उसकी बात स्वीकार कर ली। हाय! शीघ्र ही हम जहाज़ पर सवार हो गये। ईपीडैमियम से कुछ मील दूर तक हम शान्ति-पूर्वक चले गये, किसी प्रकार का भयसूचक संकेत हमें वायु के सदा अनुकूल रहने वाले समुद्र में नहीं मिला, लेकिन अधिक देर तक हमारी यह आशा नहीं चल सकी, क्योंकि आकाश में धुँधले-से प्रकाश ने हमारे भयभीत मन को यह सूचना दे दी थी कि अब निश्चित ही शीघ्र मृत्यु आने वाली है। मैं तो उसको सहर्ष स्वीकार कर लेता, लेकिन मेरी पत्नी ने उस भयावने अन्त को आते देख रोना आरम्भ कर दिया। साथ में मेरे प्यारे बच्चे भी बिना कारण जाने स्वाभाविक रीति से रोने लगे। उनके करुण क्रन्दन ने मुझे कोई न कोई रक्षा का उपाय ढूंढने को विवश कर दिया। अन्य कोई उपाय नहीं था। नाविकों ने हमें उस डूबते हुए जहाज़ में छोड़कर स्वयं हमारी नाव का सहारा ले लिया था। मेरी पत्नी अपने पिछले पुत्र के प्रति अधिक चिन्तित थी, इसलिये

उसने उसे एक छोटी-सी पतवार से बाँध दिया, जैसे समुद्री यात्रा करने वाले लोग प्रायः तूफानों के समय करते हैं। उसी के साथ दूसरे जोड़े (खरीदे हुए बच्चों) में से एक भाई को बाँध दिया गया। बाकी दोनों को मैंने पतवार के दूसरे सिरे से बाँध दिया। इस तरह बच्चों को बाँधकर मैंने और मेरी पत्नी ने उनके ऊपर दृष्टि रखकर, जिनके विषय में प्रत्येक को चिन्ता थी, अपने आपको इस पतवार के दोनों सिरों से बाँध लिया और धारा के साथ सीधी बहती हुई वह पतवार हमारे अनुमान के अनुसार ही कोरिन्थ की तरफ चली। अन्त में आकाश में भयभीत कर देने वाले फैले हुए उन बादलों को पृथ्वी पर आते सूर्य के प्रकाश ने छिन्न-भिन्न कर दिया और उस प्रकाश के साथ ही समुद्र की हलचल शान्त हो गई। अब हमने देखा कि दो जहाज़ जिनमें एक कोरिन्थ का और दूसरा ईपीडैरस का था, हमारी तरफ बढ़े चले आ रहे थे। लेकिन उनके आने से पहले—ओह ! अब मैं कुछ नहीं कहूँगा। जो कुछ मैंने कहा है, उसीसे आगे की बात समझ लीजिये।

ड्यूक : आगे बताओ वृद्ध पुरुष ! बस, इतने पर ही बात को मत छोड़ो, क्योंकि यद्यपि हम तुम्हें क्षमा तो नहीं कर सकते लेकिन तुम्हारे प्रति करुणा तो दिखा ही सकते हैं।

व्यापारी : ओह ! यदि देवता इतना ही करते तो मैं अब उनको निर्दयी कहकर अपने कथन को उचित नहीं ठहराता। जब उन जहाज़ों में पाँच 'लीग' की दूरी थी उसी समय एक बड़ी चट्टान से हमारी पतवार टकरा गई और अत्यधिक वेग के कारण बीच में से टूटकर दो भागों में बँट गई, जिससे इस अन्यायपूर्ण विच्छेद में भाग्य ने दोनों के प्रति एक-सा ही व्यवहार किया था। हमारे सुख और दुःख के लिये एक-सी ही परिस्थिति थी। मेरी

प्राणप्रिया, दुःखी आत्मा, यद्यपि उसके साथ कम भार लगता था लेकिन उसके हृदय में दुःख का भार किसी प्रकार कम नहीं था । उसी कम भार के कारण वह वायु के साथ अधिक तीव्र गति से बही चली गयी और हमारी आँखों के सामने ही कोरिन्थ के मछुओं ने उन्हें पकड़ लिया, यही हमारा अनुमान था। अन्त में दूसरे जहाज़ ने आकर हमें पकड़ लिया, और जब उन्हें यह पता लगा कि अकस्मात् किसके जीवन की रक्षा उन्होंने की थी तो उन्होंने दुर्घटनाग्रस्त अपने अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया । यदि उनके जहाज़ की गति मन्द नहीं होती तो वे बलपूर्वक उन मछुओं को भी पकड़ लेते। पर जब उनका शिकार निकल गया तो वापस घर लौट आये । इस तरह मैं परम सुखस्वरूप अपनी प्राणप्रिया और बालक से अलग भटक गया। आपने मेरी कहानी सुन ली है । दुर्भाग्य ने मेरे जीवन की इस करुण कहानी को कहने के लिए ही मेरे जीवन की अवधि बढ़ा दी है।

ड्यूक : उन्हीं के लिये तुम इतने दुःखी हो रहे हो ? अब कृपा करके विस्तारपूर्वक मुझे बताओ कि अब तक उन पर और तुम पर क्या-क्या बीती है।

व्यापारी : मेरे सबसे छोटे पुत्र ने, लेकिन फिर भी मेरे स्नेह का सबसे बड़ा पात्र, अठारह वर्ष की आयु पर आकर अपने भाई के प्रति उत्सुकता प्रकट की और मुझसे अत्यंत व्यग्र होकर प्रार्थना की कि भाई की खोज में उसका सेवक उसके साथ रहे क्योंकि उसके जीवन की परिस्थिति भी तो ठीक ऐसी ही थी । उसका भाई भी उससे बिछुड़ गया था, केवल उसका नाम ही उसे ज्ञात था। अपने दूसरे पुत्र को देखने की लालसा हृदय में लेकर मैंने

उस पुत्र का बिछोह भी स्वीकार कर लिया, जिसको मैं बहुत प्यार करता था। दूर ग्रीस में मैंने पाँच वर्ष बिता दिये हैं। एशिया की सीमाओं तक मैं चारों तरफ भटकता फिरा हूँ और फिर समुद्री मार्ग से घर की तरफ चलता हुआ मैं इफीसस में आ पहुँचा। पुत्रों के मिलने की कोई आशा शेष नहीं बची है, लेकिन फिर भी संतोष नहीं होता। जिस किसी स्थान पर मनुष्य का निवास है, उसे देखे बिना मैं नहीं रह पाता, लेकिन अब यहाँ मेरे जीवन की कहानी का अन्त होता है और यदि मेरी सारी यात्राएँ मुझे केवल यही विश्वास दिला देतीं कि वे जीवित हैं तो मैं अपनी इस सामयिक मृत्यु पर अत्यंत प्रसन्न होता।

ड्यूक : अभागे ईजियन ! कठिन से कठिन आपत्ति सहन करने के लिए दुर्भाग्य ने तुम्हें अपना शिकार बनाया है। मुझ पर विश्वास करो। सच, यदि हमारे राज्य के नियमों, मेरी सत्ता, प्रतिज्ञा और सम्मान के विरुद्ध न होता जिनको मिटाने की सामर्थ्य स्वयं राजाओं तक में नहीं है, तो मेरी आत्मा अवश्य तुम्हारे पक्ष का समर्थन करती। लेकिन फिर भी यद्यपि तुम्हें मृत्युदण्ड मिल चुका है और एक बार दिया हुआ दण्ड वापस नहीं लिया जा सकता, क्योंकि इससे हमारा सम्मान कम होता है, मैं जितना भी कर सकता हूँ उतनी तुम्हारी सहायता करूँगा।

हे व्यापारी ! इसलिए मैं तुम्हें यह दिन अवकाश रूप में देता हूँ, जिससे तुम अपनी जीवन-रक्षा के लिए किसी प्रकार की सहायता की व्यवस्था कर सको। इफीसस में जितने भी तुम्हारे मित्र हैं, उन सबको देख लो। दण्डस्वरूप जो रकम निश्चित है, उसे पूरा करने के लिए उनसे उधार धन माँगो और अपने जीवन की रक्षा करो। यदि तुम यह नहीं कर पाओगे तो फिर

तुम्हें मृत्यु से कोई नहीं बचा सकता।
जेलर ! इनको कारागार ले जाओ।

जेलर : जो आज्ञा स्वामी !

व्यापारी : अपने जीवन के अन्त को कुछ समय को रोकने के लिये निराश और निस्सहाय ईजियन जाता है।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[सायरेक्यूसा के एन्टीफोलस, एक व्यापारी तथा सायरेक्यूसा के ड्रोमियो का प्रवेश]

इफीसस का व्यापारी : इसलिये आप यही प्रकट करिये कि आप इपीडैमियम के हैं, जिससे आपके माल को शीघ्र कोई जब्त न करे। आज ही सायरेक्यूसा के एक व्यापारी को यहाँ आने के अभियोग में पकड़ लिया गया है। उसके पास इतना धन नहीं है कि नगर के नियमानुसार वह अपने जीवन की रक्षा कर सके; इसीलिये जिस समय दिन भर की यात्रा से थका हुआ सूर्य पश्चिम में अस्त होगा, उससे पहले ही उसके जीवन का अन्त हो जायेगा। यह आपका धन है, जिसे मैंने अब तक रखा था।

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : ड्रोमियो ! इसे 'सेन्टोर' ले चलो, जहाँ हम ठहरे हुए हैं और मेरे आने तक तुम वहीं रहना। भोजन के समय में एक घंटे की देर है, तब तक मैं नगर के रंग-ढंग देख आता हूँ। यहाँ के भवनों तथा व्यापारियों पर दृष्टि डाल आता हूँ और तब अपनी सराय में लौटकर सोऊँगा, क्योंकि लम्बी यात्रा के कारण मैं बहुत थक गया हूँ। अच्छा, अब जाओ।

सायरेक्यूसा का ड्रोमियो : बहुत-से आदमी ऐसे होंगे जो आपके एक

शब्द पर ही आपको पकड़ लेंगे; इसलिये सच कहता हूँ, इतना धन अपने साथ लेकर जाइये।

[ड्रोमियो का प्रस्थान]

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : बड़ा विश्वासपात्र धूर्त है श्रीमान्, जो प्रायः मुझे कभी चिन्ताग्रस्त देखकर मेरे चित्त को अपनी हास्यभरी बातों से बहलाया करता है, और इस तरह मेरी चिन्ता को मिटा देता है। क्या आप मेरे साथ ही नगर में भ्रमण करते हुए मेरी सराय वापस चलकर मेरे साथ ही भोजन करियेगा ?

इफीसस का व्यापारी : श्रीमन्त ! कुछ व्यापारियों ने मुझे आमन्त्रित किया है। उनसे मुझे कुछ अधिक लाभ की आशा है, इसलिये मैं क्षमा चाहूँगा। अभी पाँच बजे ही मैं बाज़ार में आपसे मिल जाऊँगा और इसके पश्चात् सोने के समय तक आपके साथ ही रहूँगा। अब मेरा कार्य मुझे आपसे अलग होने को विवश करता है।

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : तब तक के लिये विदा। अब मैं मुक्त रूप से नगर देखने के लिये चारों तरफ फिरूँगा।

इफीसस का व्यापारी : मैं आपको आपके स्वयं के सन्तोष के लिये छोड़ता हूँ।

[प्रस्थान]

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : वह तो मुझे मेरे स्वयं के सन्तोष के लिये छोड़ता है, उस वस्तु के लिये छोड़ता है, जिसे मैं प्राप्त नहीं कर सकता।

मैं संसार के लिये पानी की एक बूंद की तरह हूँ, जो समुद्र में दूसरी बूंद की खोज करती-फिरती है। मैं पूरी उत्सुकता लेकर

अज्ञात रूप से अपने भाई की खोज करने आया था, लेकिन मैं स्वयं दुविधा में फँस गया हूँ, इसलिये मैं अपने भाई और माँ को पाने के लिये, उनकी खोज में दुःखी होकर स्वयं को खो रहा हूँ।

[इफीसस के ड्रोमियो का प्रवेश]

आ गया मेरी आयु का प्रमाणस्वरूप, मेरे ही साथ जन्म लेने वाला। क्यों, क्या है? इतने शीघ्र तुम क्यों वापस आ गये?

इफीसस का ड्रोमियो : शीघ्र वापस आ गया, या कहिये कि काफ़ी देर में आ पहुँचा। मुर्गा पूरी तरह गरम है और घेंटा भी अच्छी तरह पक चुका है। घड़ी ने बारह बजा दिये हैं और मेरी स्वामिनी ने मेरे गाल पर एक बजा दिया है। वे इतनी गरम क्यों हैं? क्योंकि मांस ठंडा हो चुका है। मांस ठंडा क्यों है? क्योंकि आप घर नहीं आये हैं। आप इसलिये घर नहीं आये हैं, क्योंकि आपको भूख नहीं लगी है। उपवास तोड़ देने पर भी आपको भूख नहीं लगी है, लेकिन हम जो यह जानते हैं कि उपवास रखना और प्रार्थना करना क्या होता है, आपकी आज की भूल के लिये दुःखी हैं।

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : ये सब बातें बन्द करो और कृपा करके मुझे यह बताओ कि जो धन मैंने तुमको दिया था, उसे तुम कहाँ छोड़ आये हो?

इफीसस का ड्रोमियो : ओह, वे छै पेंस तो पिछले बुधवार को मुझे जीन बनाने वाले को स्वामिनी के लिये बनाये गये उस फन्दे के मूल्यस्वरूप देने के लिये दिये गये थे, जो पूँछ से जीन को बाँधने के काम आता है। लेकिन वे तो उस आदमी के पास हैं, मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : मैं हँसी-मज़ाक नहीं चाहता इस समय।

देर मत करो, बताओ शीघ्र कहाँ है वह रक़म ? हम यहाँ सभी से अपरिचित हैं, फिर तुमने किसी दूसरे को वह रक़म देकर सहसा ही उस पर कैसे विश्वास कर लिया ?

इफीसस का ड्रोमियो : श्रीमान् ! आप भोजन करने बैठें, उस समय भले ही मज़ाक कर लें इस समय नहीं, मेरी प्रार्थना है। मैं अपनी स्वामिनी के यहाँ से तीव्रगति से आया हूँ और अब यदि मैं वापस लौटकर जाता हूँ तो सच, मैं सराय के उस खम्भे की तरह हो जाऊँगा जिसके ऊपर कर्ज़ की रक़म लिखी होती है। क्योंकि वे आपके सारे दोष को मेरे सिर पर डालेंगी । मेरे विचार से तो आपका पेट मेरे पेट की तरह आपकी घड़ी होनी चाहिये, जिसके खटखटाने से आप बिना किसी संदेशवाहक के ही घर वापस चले जायें।

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : रहने दो ड्रोमियो ! यह हँसी-मज़ाक का वक्त नहीं है। इन्हें किसी अच्छे वक्त के लिये रख छोड़ो, लेकिन इस वक्त तो यह बताओ कि वह सोना कहाँ है, जिसे मैंने तुम्हें दिया था ?

इफीसस का ड्रोमियो : मुझे श्रीमान् ? आपने मुझे तो कोई सोना नहीं दिया था।

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : अच्छा धूर्त श्रीमान् ! अब तुम्हारी मूर्खता हो चुकी। मुझे बताओ कि किस पर तुम उस धन का अपना उत्तरदायित्व छोड़ आये हो ?

इफीसस का ड्रोमियो : मेरा उत्तरदायित्व तो श्रीमान् ! आपको बाज़ार से आपके घर 'फीनिक्स' ले जाना है, जहाँ भोजन के लिए आपकी प्रतीक्षा हो रही है । मेरी स्वामिनी तथा उनकी बहिन आपके लिये ही रुकी हुई हैं ।

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : अब चूंकि मैं एक ईसाई हूँ, इसलिए मुझे ठीक-ठीक उत्तर दो कि किस सुरक्षित स्थान पर तुमने मेरे धन को रख दिया है, नहीं तो समझ लो, मुझे गुस्सा आ गया तो मैं तुम्हारे इस सिर को तोड़ दूंगा, जिसके बल-बूते पर तुम यह चाल खेल रहे हो।

कहाँ हैं वे हज़ार 'मार्क'[१] जिन्हें मैंने तुम्हें दिया था ?

इफीसस का ड्रोमियो : मेरे सिर पर तो आपके निशान बने हुए हैं और स्वामिनी की मार के निशान कन्धों पर दिखाई देते हैं, लेकिन फिर भी आप दोनों के मिलाकर भी हजार निशान[१] तो अभी नहीं हुए।

अगर श्रीमान् को मैं उन निशानों को वापस करूँगा तो सम्भवतया आप उन्हें सह नहीं पायेंगे।

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : तेरी स्वामिनी के निशान ? कौन स्वामिनी है तेरी ? गुलाम कहीं का !

इफीसस का ड्रोमियो : आपकी पत्नी श्रीमान् ! मेरी स्वामिनी इस समय फीनिक्स में हैं। वही जिन्होंने आपके घर आकर भोजन करने तक पूरा उपवास कर रखा है और जो आपके शीघ्र घर लौटकर भोजन करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करती हैं।

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : अच्छा, तो मना करने पर भी तू मेरे मुँह पर ही मेरी हँसी उड़ाने से बाज़ नहीं आयेगा; तो धूर्त कहीं का ! फिर इसका मज़ा चख।

इफीसस का ड्रोमियो : क्या मतलब है आपका ? नहीं, नहीं, भगवान

---

१. यहाँ मार्क (Mark) शब्द को लेकर नाटककार ने अपना शब्द-कौशल दिखाया है। मार्क एक सिक्का होता है। और उसका शाब्दिक अर्थ निशान भी होता है। हमने वह चातुर्य न दिखाते हुए भावार्थ दे दिया है।

के लिए अपने हाथ न उठाइये। नहीं श्रीमान्! ऐसा न करिये, मैं सिर पर पैर रखकर भागता हूँ।

[प्रस्थान]

सायरेक्यूसा का एन्टीफोलस : पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि धूर्त सारी रकम को कहीं ठगा गया है। कहा जाता है कि इस नगर में चारों ओर धोखेधड़ी का व्यापार चलता है। चालाक जादूगर हैं, जो आँख को भी धोखा दे देते हैं; अंधेरे में काम करने वाले तान्त्रिक हैं, जो मस्तिष्क को ही बदल देते हैं; घातक डायनें हैं जो शरीर का रूप ही बदल देती हैं; बनावटी वेश धारण किये हुए धोखेबाज़ हैं; बेकार बातें गढ़ने वाले शेखीख़ोर हैं और इसी तरह के बहुत-से बदमाश हैं। यदि यह सिद्ध हो गया तो मैं शीघ्र ही यहाँ से सेन्टोर जाऊँगा और उस गुलाम की तलाश करूँगा। मुझे बहुत डर है कि मेरा धन किसी प्रकार भी सुरक्षित नहीं है।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[इफीसस के एन्टीफोलस की पत्नी एड्रियाना का अपनी बहिन ल्यूसियाना के साथ प्रवेश]

एड्रियाना : न तो मेरे पति ही लौटकर आये और न मेरा वह दास ही आया, जिसे मैंने इतनी शीघ्रता से अपने स्वामी को खोजने के लिये भेजा था। ल्यूसियाना ! निश्चित रूप से दो बजे का समय है।

ल्यूसियाना : मुझे तो लगता है कि किसी व्यापारी ने उन्हें निमन्त्रित किया है और बाजार से सीधे ही वे कहीं खाना खाने चले गये हैं। मेरी अच्छी बहिन ! इसके लिये परेशान न होओ। आओ, हम खाना खा लें। पुरुष अपनी स्वतन्त्रता का स्वयं नियन्ता होता है और समय ही उसका नियन्ता होता है। समय देखकर ही वे जाते और आते हैं, इसलिये धैर्य रखो बहिन !

एड्रियाना : हमारी अपेक्षा इनकी वह स्वतन्त्रता इतनी अधिक क्यों होनी चाहिये ?

ल्यूसियाना : क्योंकि वे घर से बाहर जाकर अपना कार्य करते हैं।

एड्रियाना : सुनो, जब मैं उनकी इस तरह सेवा करती हूँ तो वे इसका बुरा मानते हैं।

ल्यूसियाना : ओह ! जानती हूँ, वे तो तुम्हारी इच्छा की लगाम हैं।

एड्रियाना : लेकिन इस तरह की लगाम तो गधों के सिवाय किसी के भी नहीं लगाई जाती।

ल्यूसियाना : स्वेच्छा से निर्णीत स्वतन्त्रता के दण्डस्वरूप सदा दुःख ही मिलता है। अखिल ब्रह्माण्ड में ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जिसकी पृथ्वी, समुद्र या आकाश में कहीं सीमा न हो। वन्य पशु, मछली तथा फाख्ता आदि सभी के बीच नर का शासन चलता है, उनके नियन्त्रण में मादाएँ रहती हैं। फिर पुरुष, जिसमें आध्यात्मिक चेतना अधिक है, जो इन सभी का स्वामी है; इन्हींका नहीं बल्कि सारी पृथ्वी और समुद्र पर जिसका आधिपत्य है और जो मछली और फाख्ता आदि की अपेक्षा अधिक प्रमुखता रखता हुआ बौद्धिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से अधिक जागरूक है, स्त्री का स्वामी होता है; उस पर हर प्रकार से शासन करता है; इसलिये उनकी इच्छा के अनुसार ही कार्य करना तुम्हारे लिये उचित है बहिन !

एड्रियाना : इसी दासता के बन्धन के कारण तुमने विवाह नहीं किया है ?

ल्यूसियाना : यह बात नहीं, बल्कि प्रसव सम्बन्धी आपत्तियाँ ही इसका कारण हैं।

एड्रियाना : लेकिन एक बार विवाह हो जाने के बाद तो तुम इस दासता को कुछ न कुछ सहन करने लगोगी।

ल्यूसियाना : प्रेम करना सीखने से पहले तो मैं हुक्म बजाना सीखूंगी।

एड्रियाना : अगर तुम्हारे पति किसी दूसरे स्थान को चले जाते फिर कैसे करतीं।

ल्यूसियाना : जब तक वे वापस घर नहीं आ जाते, मैं अपने आपको संयम में रखती।

एड्रियाना : तुम्हारे धैर्य की परीक्षा हुई ही कब है, फिर यदि तुम ऐसी बातें करो तो क्या आश्चर्य है ? जिनके सामने कोई अन्य

कारण नहीं होता, वे इतने सहनशील हो जाते हैं। एक दुःखी आत्मा को, जो चिन्ता और क्लेशयुक्त है, हम रोता सुनकर शान्त रहने के लिये कहते हैं; लेकिन यदि हमारे ऊपर भी इसी तरह का या इससे भी अधिक दुःख आकर पड़ता है, तब हम स्वयं रोने लगते हैं। इसीलिये कहती हूँ, तुम्हारा ऐसा कोई निर्दयी पति तो नहीं है, जो तुम्हारे हृदय को दुखाये। अब तुम थोथे धैर्य का उपदेश मुझे देकर मेरे दुःख का भार हलका करना चाहती हो, लेकिन यदि तुम स्वयं कभी इस विरह-वेदना को महसूस करो तब तुम इस थोथे धैर्य की बात बिलकुल छोड़ दोगी।

ल्यूसियाना : ठीक है, इसीकी परीक्षा करने के लिए मैं एक दिन विवाह करूँगी। अरे देखो, तुम्हारे पति निकट ही मालूम देते हैं, तुम्हारा आदमी वापस आ गया है।

[इफीसस के ड्रोमियो का प्रवेश]

एड्रियाना : बताओ, क्या तुम्हारे स्वामी पास आ गये हैं ?

इफीसस का ड्रोमियो : नहीं, देखिए, उन्होंने दोनों हाथों[1] से मेरी खबर ली है। मेरे कान इसके लिये साक्षी हैं।

एड्रियाना : क्या तूने उनसे कुछ कहा था ? तू उनके दिमाग़ को जानता है ?

इफीसस का ड्रोमियो : जी हाँ, जी हाँ, उन्होंने तो अपना इरादा मेरे कानों पर जाहिर किया। उनके हाथ पर अभिशाप गिरें, मैं तो

---

१. पहला शब्द-चातुर्य तो नाटककार ने हाथ (Hand) पर दिखाया है। एड्रियाना पूछती है : क्या तुम्हारे स्वामी पास आ गए हैं ? At hand का अर्थ पास है। लेकिन दूसरे ही संवाद में इसी हैन्ड को लेकर ड्रोमियो ने 'पन' (द्वयर्थक शब्द) का प्रयोग किया है।

मुश्किल से उसे सहन कर पाया।[१]

ल्यूसियाना : क्या वे ऐसी कोई संदेहास्पद बात कह रहे थे, जिसका अर्थ तू नहीं समझ पाया ?

इफीसस का ड्रोमियो : जी नहीं, उन्होंने इस साफ़ तरीके से मुझे पीटा कि उनके एक-एक थप्पड़ को मैंने महसूस किया और फिर इसने मुझे एक ऐसे संदेह-से में डाल दिया कि मैं उनका कारण मुश्किल से ही समझ पाया।

एड्रियाना : लेकिन यह बता कि वे घर आ रहे हैं न ? इससे मालूम होता है कि अपनी पत्नी को प्रसन्न रखने को वे बड़ी चिन्ता रखते हैं।

इफीसस का ड्रोमियो : लेकिन स्वामिनी ! यह निश्चित है कि मेरे स्वामी ईर्ष्या के वशीभूत होकर क्रोध से पागल हो रहे हैं।[२]

एड्रियाना : ईर्ष्या के कारण पागल ! बदमाश कैसी ईर्ष्या ?

इफीसस का ड्रोमियो : नहीं, नहीं, मेरा मतलब आपके चाल-चलन से नहीं था, लेकिन सच कहता हूँ, वे पूरी तरह से पागल हो गये हैं। मैंने उनसे घर चलकर भोजन करने के लिए कहा था तो वे मुझसे एक हजार सोने के मार्क माँगने लगे।

---

१. यहां Understand के दो अर्थ हैं, सहन करना और समझना। इसके आगे Mind पर भी 'पन' (द्वयर्थक शब्द) का प्रयोग होता है। इसका अर्थ है दिमाग और इरादा। हिन्दी में इस कौशल को निभाना कठिन है।

२. Horn-mad कहकर ड्रोमियो Cuckold (व्यभिचारिणी स्त्री के पति) की तरफ संकेत नहीं करता, लेकिन एड्रियाना को यही भ्रम होता है, तभी वह ईर्ष्या शब्द सुनकर उसपर क्रुद्ध हो जाती है। हमने भावार्थ करके अपनी सीमाओं में उसे निभाया है।

मैंने कहा—'साहब, भोजन का समय हो गया है।'
उन्होंने कहा—'मेरा सोना ?'
मैंने कहा—'आपका गोश्त इस वक्त गरम है।'
उन्होंने कहा—'मेरा सोना ?'
मैंने कहा—'क्या आप घर चलेंगे ?'
उन्होंने फिर वही कहा—'मेरा सोना ?'
कहने लगे, 'बदमाश कहीं का, कहाँ है वे एक हज़ार मार्क जो मैंने तुझे दिये ?'
मैंने कहा—'साहब वह घेंटा पक गया है।'
लेकिन उन्होंने कहा—'मेरा सोना ?'
मैंने कहा—'मेरी स्वामिनी !'
इस पर उन्होंने पुकार कर कहा—'फाँसी पर लटका दे अपनी स्वामिनी को। मैं नहीं जानता तेरी स्वामिनी को। चल भाग जा, उसी स्वामिनी के पास।

ल्यूसियाना : किसने कहा ?

इफीसस का ड्रोमियो : मेरे स्वामी ने कहा—मैं जानता हूँ।—उन्होंने कहा था—कोई घर, पत्नी और स्वामिनी नहीं।—मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ कि जो भी सन्देश मुझे कहना था, उसे मैं कन्धों पर रखकर घर ले आया हूँ; क्योंकि इसके फलस्वरूप उन्होंने मुझे पीटा था।

एड्रियाना : दास कहीं का, फिर वापस जा और उनको घर ले आ !

इफीसस का ड्रोमियो : फिर वापस जाऊँ और फिर इसी तरह पिटकर घर वापस आऊँ ? नहीं-नहीं, भगवान के लिये किसी दूसरे सन्देशवाहक को भेज दीजिये।

एड्रियाना : वापस चला जा बदमाश ! नहीं तो अभी मैं तेरे सिर को तोड़ दूँगी ।

इफीसस का ड्रोमियो : दूसरी बार पीटकर तो वे 'क्रौस'[१] खड़ा कर देंगे। फिर तो आप दोनों के बीच मेरा ही यह सिर पवित्र हो जायेगा ।

एड्रियाना : अच्छा, बस, बेकार बात करने वाले मूर्ख ! अपने स्वामी को घर ले आ ।

इफीसस का ड्रोमियो : क्या मैं आपसे ऐसे सीधे बोल रहा हूँ, जैसे आप बोल रही हैं कि मुझे फुटबौल समझकर आप इस तरह ठुकराती हैं ? इधर से तो आप ठोकर लगाती हैं और उधर से वे लगायेंगे । यदि मैं इस सेवा से बचा रह जाऊँ तो आप मेरे शरीर पर खाल चढ़वा देना ।

[प्रस्थान]

ल्यूसियाना : छोड़ो भी; देखो, कैसी गहन चिन्ता तुम्हारे चेहरे पर उतर आई है ।

एड्रियाना : उनकी प्रिया उनके सहवास का आनन्द उठा रही होंगी और मैं यहाँ घर पर उनकी प्रसन्न मुद्रा के लिये तरसती हुई चिन्तित बैठी हूँ । क्या आयु अधिक हो जाने से मेरे गालों पर वह लुभावना सौन्दर्य नहीं रहा ? यदि नहीं, तो उन्होंने ही तो इसे नष्ट किया है । क्या मेरी बातचीत पूरी तरह रसहीन होती है ? मुझमें वाक्-कौशल नहीं है और इस कारण यदि मेरी बातचीत में किसी

---

१. Cross : वह सूली जिस पर ईसा मसीह को फाँसी दी गई थी। ईसाई लोग माथा, दोनों कंधों और पेट पर हाथ रखकर हवा में सूली का चिह्न बनाते हैं; जिसका अर्थ है, भगवान बचाये; इसका दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि वे मार-मार कर सूलीनुमा बना देंगे ।

तरह रसभरा प्रवाह नहीं है तो उपेक्षा और तिरस्कार तो इसे सख्त संगमरमर से भी अधिक सख्त कर देता है। क्या उनके चमकीले वस्त्रों ने उनको लुभा लिया है ? यह मेरा दोष तो नहीं है ? वे तो पूर्ण रूप से मेरे स्वामी हैं । यदि मुझमें किसी प्रकार के दोष आ गये हैं तो उनके लिये वे ही तो उत्तरदायी है । यदि मैं किसी तरह से कुरूप हो गई हूँ तो इसके कारण तो वें ही हैं। मेरा यह सुन्दर रूप जो इस समय पूरी तरह मिट-सा गया है, उनकी एक उत्फुल्ल दृष्टि से फिर पूर्ववत् हो जायगा । लेकिन वे तो बन्धन तोड़कर इस तरह खुले फिरने वाले हरिण की तरह हैं जो बाड़ा तोड़कर फिर अपने घर से दूर अपनी भूख मिटाता है। मैं ठहरी उनकी भोली-भाली पत्नी, सस्ती-सी ।

ल्यूसियाना : तुम्हारी यह ईर्ष्या तुम्हें ही हानि पहुँचाने वाली है । इसे हृदय से निकाल दो ।

एड्रियाना : जिन मूर्खों के पास अनुभव करने के लिये हृदय नहीं होता, वे ही ऐसे दुःखों को कुछ नहीं समझते । मैं जानती हूँ कि उनकी दृष्टि किसी अन्य स्थान पर अपना प्यार दिखा रही है, और नहीं तो क्या कारण है कि वे अभी तक घर नहीं आये ? बहिन, तुम्हें तो मालूम है कि उन्होंने मुझसे एक जंज़ीर का वायदा किया था । अगर वे मेरे प्रति पूरी तरह वफ़ादार हैं तो काश ! केवल उसी कारण वे अभी तक नहीं आये हों !

मैं देखती हूँ कि जब जवाहरात को भी ज़्यादा चिकना बनाया जाता है तो उसका सौंदर्य मिट जाता है; फिर भी सोना, जिसको परखने के लिये दूसरे लोग छूते हैं और

छूकर लेने की इच्छा करते हैं, फिर भी अपना मूल्य रखता है। सोना पहनने को कोई भी आदमी, जिसने किसी तरह की बुराई से भी नाम कमाया हो, बुरा नहीं कहता ।

अगर मेरा सौन्दर्य उनकी दृष्टि को आकर्षित नहीं कर सकता तो जो कुछ भी मेरे पास बच रहा है, उसीको लेकर मैं रोते-रोते अपने प्राण दे दूँगी ।

ल्यूसियाना : मूर्खतापूर्ण ईर्ष्या भी कितने मूर्खों पर अपना अधिकार जमा लेती है ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[सायरेक्यूसा के एन्टीफोलस का प्रवेश]

सा० का एन्टीफोलस : जो सोना मैंने ड्रोमियो को दिया था वह सेन्टोर में सुरक्षित रखा हुआ है यह मेरा अनुमान है, और मेरा मेज़बान भी कहता था कि होशियारी से रहने वाला गुलाम अब मुझे खोजने के लिये बाहर फिर रहा है। जिस समय मैंने बाजार से इसे वापस भेजा था उस समय से मैंने इससे बातें नहीं की हैं। अरे, वह तो यहाँ आ रहा है ?

[सायरेक्यूसा के ड्रोमियो का प्रवेश]

कहिये श्रीमान् ! अब कैसे हैं ? हँसी-मज़ाक का वह बुखार तो आपका उतर गया न ? थप्पड़ खाने के बड़े इच्छुक हो न तुम, तो फिर मुझ से मज़ाक करो ।

तुम्हें सेन्टोर का पता नहीं है ? तुमने कोई सोना नहीं लिया था ? तुम्हारी स्वामिनी ने खाने के लिये मुझे घर बुलाया था ? मेरा घर फीनिक्स पर है ? क्या तू पागल हो गया था कि इस

तरह पागलों जैसे उत्तर मुझे दे रहा था ?

सा० का ड्रोमियो : कैसे उत्तर श्रीमान् ? मैंने कब ऐसा कहा ?

सा० का एन्टीफोलस : अभी-अभी, और यहीं। आधा घंटा भी नहीं बीता होगा।

सा० का ड्रोमियो : आपने जब सोना देकर मुझे सेन्टोर भेजा था, इसके बाद तो मैंने आपको देखा भी नहीं था।

सा० का एन्टीफोलस : बदमाश ! तूने सोना पाने तक की बात को झुठाया था और मुझसे किसी स्वामिनी और दावत की बात कहने लगा था, जिसको सुनकर तूने देखा था, मुझे गुस्सा आ गया था।

सा० का ड्रोमियो : खूब ! इस मज़ाकिया तबियत में आपको देखकर तो मुझे बड़ी हँसी आ रही है। क्या मतलब है इस मज़ाक का स्वामी ? कृपा करके बताइये, आखिर बात क्या है ?

सा० का एन्टीफोलस : अच्छा, तो मेरे मुँह पर ही मेरी हँसी उड़ा रहा है ? तू सोचता है कि मैं कोई मज़ाक कर रहा हूँ ? तो फिर सम्भाल, यह ले।

[**ड्रोमियो को पीटता है।**]

सा० का ड्रोमियो : भगवान के लिये रुक जाइये श्रीमान् ! अब तो आपका यह मज़ाक कुछ गम्भीर मालूम देता है। बताइये, किस लेन-देन में आपने मुझे ये दिये हैं ?

सा० का एन्टीफोलस : क्योंकि मैं कभी-कभी तेरे साथ अच्छी तरह से अपने विदूषक का-सा व्यवहार करता हूँ और तुझसे बातचीत करता हूँ, तो इसका अर्थ यह है कि तेरी धृष्टता यहाँ तक बढ़ जाय कि तू मेरे प्रेम का मज़ाक बनाये और मेरे गम्भीर समय को कोई आम चीज़ समझ ले।

बेवकूफ़ मच्छर उस समय भनभनायें जब कि सूरज चमकता हो लेकिन उसके छिपते ही उन्हें भी किसी गुप्त स्थान में छिप जाना चाहिये। अगर तुम मुझसे मज़ाक ही करना चाहते हो तो पहले मेरा मिजाज़ देख लिया करो और मेरी दृष्टि देखकर उसके अनुसार व्यवहार किया करो, नहीं तो मैं तुम्हारा सिर तोड़ दूँगा।

सा० का ड्रोमियो : आप इसे सिर की टोपी[1] कहते हैं? इस तरह तो आप पीटना छोड़ देते। काश! वह टोपी मेरे सिर पर होती तो फिर आप चाहे जितनी ही देर तक थप्पड़ लगाते। मैं अपने सिर के लिए एक टोपी लाऊँगा और फिर उस टोपी में अपने सिर को छिपाऊँगा, नहीं तो फिर कन्धों के भीतर मुझे अपनी बुद्धि को खोजना पड़ेगा। लेकिन मेरी प्रार्थना मानकर यह तो बतायें कि मुझे किस कारण पीटा गया है?

सा० का एन्टीफोलस : क्या तू नहीं जानता?

सा० का ड्रोमियो : मुझे पीटा गया है, इसके सिवाय और कुछ भी तो नहीं स्वामी!

सा० का एन्टीफोलस : क्या मैं तुम्हें बताऊँ—क्यों?

सा० का ड्रोमियो : जी हाँ, और इसका कारण, क्योंकि प्रायः कहा जाता है कि प्रत्येक क्यों के साथ एक कारण यानी क्योंकि होता है।

सा० का एन्टीफोलस : अच्छा, क्यों तो इसलिए कि तुमने मेरे मुँह पर मेरा मजाक बनाया था और क्योंकि इस लिये कि फिर

---

१. Scorce : इस शब्द के दो अर्थ हैं, सिर और सिर की टोपी। एन्टीफोलस पहले अर्थ में इसका प्रयोग करता है और ड्रोमियो दूसरे में। यह भी 'पन' (द्व्यर्थक शब्द) है।

दूसरी बार उसी को दोहराया था।

सा० का ड्रोमियो : क्या कभी भी बिना बात किसी आदमी को इस तरह पीटा गया है, जबकि इस क्यों और क्योंकि में न किसी तरह की तुक है और न कोई कारण। ठीक है, श्रीमान्! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

सा० का एन्टीफोलस : मुझे धन्यवाद? किसलिये श्रीमान्?

सा० का ड्रोमियो : इस 'कुछ' के लिये श्रीमान्, जो आपने मुझे कुछ नहीं के बदले में दिया है।

सा० का एन्टीफोलस : अच्छा, तो आगे मैं अपनी गलती ठीक कर लूँगा। आपको 'कुछ' के लिये अब कुछ नहीं दूँगा लेकिन यह बताइये कि क्या यह खाने का वक्त है?

सा० का ड्रोमियो . जी नहीं। मेरे ख्याल से उस गोश्त की कमी है जो मेरे पास है।

सा० का एन्टीफोलस : ठीक वक्त पर श्रीमान्! वह क्या है?

सा० का ड्रोमियो : चरबी है।

सा० का एन्टीफोलस : लेकिन श्रीमान्! तब तो यह खुश्क हो जायगा।

सा० का ड्रोमियो : अगर ऐसा हो जाय तो भले ही उसमें से कुछ भी मत खाइये।

सा० का एन्टीफोलस : क्यों?

सा० का ड्रोमियो : जिससे कहीं आपको फिर गुस्सा न आ जाय और फिर मुझे आप इस बुरी तरह पीटने लग जायें कि चमड़ी ही नहीं उधड़े और सब बातें हो जायँ।

सा० का एन्टीफोलस : श्रीमान्! ठीक वक्त देखकर ही मजाक करना सीखिये। हर एक बात का अपना एक वक्त होता है।

सा० का ड्रोमियो : मैंने हिम्मत करके यह झुठाया है कि आप पहले इतने गुस्से में थे।

सा० का एन्टीफोलस : किस नियम से श्रीमान् ?

सा० का ड्रोमियो : स्वयं 'पिता समय' के गंजे सिर की तरह साफ नियम से।

सा० का एन्टीफोलस : अच्छा तो बताओ।

सा० का ड्रोमियो : श्रीमान् ! जिस आदमी के बाल एक बार सिर से उड़ जाते हैं, उनके फिर आने का कोई वक्त नहीं होता।

सा० का एन्टीफोलस : क्या अदालती कार्रवाई करके भी वह उन्हें नहीं पा सकता ?

सा० का ड्रोमियो : जी हाँ ! किसी दूसरे आदमी के बाल लेकर लगा लिये जायँ और फिर सिर पर नकली बाल लगाने का दण्ड भर दिया जाय।

सा० का एन्टीफोलस : तो क्या शरीर पर इतने अधिक बाल उगने पर भी समय बालों के मामले में इतना कंजूस है ?

सा० का ड्रोमियो : क्योंकि वह वरदानस्वरूप वन्य पशुओं को बहुत बाल दे देता है और मनुष्यों को बाल देने में जो कमी रह जाती है उसे उन्हें बुद्धि-कौशल देकर पूरा कर देता है।

सा० का एन्टीफोलस : लेकिन ऐसे तो बहुत आदमी हैं, जिनके बाल तो अधिक होते हैं लेकिन बुद्धि-कौशल उनमें फिर भी कम नहीं होता है।

सा० का ड्रोमियो : ऐसा एक भी नहीं जिसको इस बुद्धि-कौशल के पीछे अपने बाल न खोने पड़ें।

सा० का एन्टीफोलस : तो क्या तुम इससे यह निष्कर्ष निकालते हो कि जिनके सिर पर बाल होते हैं वे बिना किसी तरह के बुद्धि-कौशल के भोले आदमी होते हैं ?

सा० का ड्रोमियो : जितने अधिक भोले होंगे उतने ही अपने आपको खोयेंगे, फिर भी ऐसा आदमी एक तरह के मज़ाक में ही खोता है।

सा० का एन्टीफोलस : किस कारण से ?

सा० का ड्रोमियो : दो कारणों से और वे भी सुदृढ़ कारणों से।

सा० का एन्टीफोलस : न, न, सुदृढ़ नहीं।

सा० का ड्रोमियो : तो फिर निश्चित कारणों से कहिये।

सा ० का एन्टीफोलस : न, न, झूठी बात में निश्चित कारण नहीं।

सा० का ड्रोमियो : तो फिर अटल कारण मानिये।

सा० का एन्टीफोलस : अच्छा, बताओ उनको।

सा० का ड्रोमियो : एक तो यह है कि जो कुछ वह बनावटी बालों पर खर्च करेगा वह बच जायेगा और दूसरा कारण है कि खाने के वक्त वे बाल आकर उसकी सब्जी में भी नहीं गिरेंगे।

सा० एन्टीफोलस : तो तुमने सारे वक्त यह साबित किया कि सभी चीज़ों के लिये यहाँ कोई वक्त नहीं होता।

सा० का ड्रोमियो : जी हाँ, जी हाँ। यही तो। कुदरत ने एक बार जब बाल छीन लिये तो फिर उनके वापस आने का कोई वक्त नहीं होता।

सा० का एन्टीफोलस : लेकिन तुम्हारे कारण का कोई दृढ़ आधार नहीं है। उनके वापस आने का वक्त क्यों नहीं है ?

सा० का ड्रोमियो : अच्छा तो मैं अपनी बात इस तरह ठीक कर लेता हूँ--सुनिये, समय स्वयं गंजा होता है और इसलिये जब तक दुनिया खत्म न हो जायेगी तब तक गंजे ही इसके अनुयायी होंगे।

सा० का एन्टीफोलस : मैं जानता था कि यह इसी तरह का गंजा

निष्कर्ष होगा। अरे, जरा धीरे, कौन वहाँ से हमारी तरफ इशारा कर रहा है ?

[एड्रियाना और ल्यूसियाना का प्रवेश]

एड्रियाना : ऐन्टीफोलस ! इस तरह विचित्र दिखाई दे रहे हो और आँखों में क्रोध लिये हुए हो। अवश्य किसी दूसरी स्त्री ने तुम्हारी इस मधुर मुख-मुद्रा को अपने वश में कर लिया है। मैं एड्रियाना नहीं हूँ और न अब तुम्हारी पत्नी हूँ। वह भी एक समय था, जब तुम बिना कहे ही शपथ खाया करते थे कि वे शब्द तुम्हारे कानों को कभी भी संगीत की मधुरता नहीं दे सकते, जो मेरे मुँह से न निकले हों। फिर कहते थे कि जिस चीज़ को मैं न देख लूँ, वह तुम्हारी दृष्टि को कभी आकर्षित कर ही नहीं सकती थी। इसी प्रकार तुम्हारे हाथ उसी चीज को प्रसन्नता से छूते थे, जिसे पहले मैंने छू लिया होता था। फिर तुम्हें कभी भी उस मांस में स्वाद नहीं आया, जो मेरे हाथों से तुम्हारे लिये काटकर न पकाया गया हो। अब यह क्या हो गया प्रियतम ! यह सब कैसे हो गया कि तुम स्वयं अपनी आत्मा से ही अलग हो गये हो ? मुझसे सम्बन्ध तोड़ने को मैं अपनी स्वयं की आत्मा से अलग होना ही कहूँगी। दोनों आत्माओं का एक सूत्र में बँधकर एक दूसरे में विलय हो जाना कहीं तुम्हारी पृथक् सत्ता से अच्छा है। आह प्रियतम ! इस तरह मुझसे सम्बन्ध न तोड़ो। मेरे प्रेम को पहचानो। जिस आसानी के साथ तुम पानी के भँवर में एक बूंद डालकर उसे वहाँ से बिना घटा-बढ़ी के उठा लो, उसी प्रकार अपने आपको मुझसे अलग कर लो, लेकिन मुझे भी नहीं। अगर तुम्हारे कानों में यह बात आती कि मैं व्यभिचारिणी या स्वेच्छाचारिणी हूँ, तो तुम्हारे हृदय को कितना धक्का लगता !

यह सुनकर तुम्हें कितना दु:ख होता कि जिस शरीर को मैंने तुम्हें समर्पित कर दिया है, वही विकृत काम-वासना के वशीभूत होकर दूषित हो ! तब क्या तुम मेरे ऊपर नहीं थूकते ? तब क्या तुम मेरे मुँह पर ही अपने पति होने का गर्व फेंक कर नहीं मारते और मुझसे घृणा नहीं करने लगते ? तब क्या मुझ वेश्या-दुराचारिणी की दूषित खाल तक को तुम नोंचकर मेरे विश्वासघाती हाथ से सुहाग की अँगूठी नहीं उतार लेते और उसको पूरी तरह सम्बन्ध-विच्छेद की शपथ खाकर तोड़ नहीं देते ?

मैं जानती हूँ, तुम यही करते और इसीलिये देखो, अब तुम वही कर रहे हो। मैं विकृत काम-लिप्सा के अपराध से दूषित हो चुकी हूँ क्योंकि अगर हम दोनों की सत्ता एक ही है तो तुम्हारा अपराध मेरा अपराध है। तुम्हारे शरीर के दोषों को मैं अपने ऊपर लेकर अपने को दूषित मानती हूँ। तो फिर अपने सच्चे विवाह-सम्बन्धों के प्रति अपना सच्चा सम्बन्ध निबाहो। दूषित बनकर तो मैं रहूँगी, तुम तो पवित्र और सम्मानित बनकर रहो।

सा० का एन्टीफोलस : सुन्दरी ! तुम मुझसे यह सारी बातें कह रही हो ? मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं हूँ। इफीसस में आये मुझे सिर्फ दो घंटे ही बीते हैं। जितना मैं तुम्हारे इस नगर से अपरिचित हूँ, उतना ही तुम्हारी बातों से हूँ। अपनी पूरी बुद्धि लगाकर मैं इन बातों को समझने की कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन सच कहूँ तो, मुझमें तो इनके एक भी शब्द समझने की पर्याप्त बुद्धि नहीं है।

ल्यूसियाना : बुरी बात है भाई ! तुम इतने कैसे बदल गये ? मेरी बहिन के प्रति ऐसा व्यवहार तो तुम कभी नहीं करते थे ? उसने तुम्हारे पास ड्रोमियो को घर खाना खाने के लिये बुलाने भेजा था।

सा० का एन्टीफोलस : ड्रोमियो को ?

सा० का ड्रोमियो : मुझको ?

एड्रियाना : हाँ, तुमको और तुमने आकर उत्तर दिया था कि उन्होंने तुमको मारा और थप्पड़ों के दौरान में कहा था कि न तो मेरा घर उनका है और न मैं उनकी पत्नी हूँ।

सा० का एन्टीफोलस : कहिये श्रीमान् ! क्या आपकी इन श्रीमती जी से बातें हुई थीं ? इस आपसी समझौते में तुमने क्या-क्या पका डाला है ?

सा०का ड्रोमियो : मेरे बारे में कह रहे हैं ? मैंने तो अभी इन्हें पहली बार ही देखा है।

सा० का एन्टीफोलस : झूठ बोलता है बदमाश ! जो कुछ भी इन्होंने कहा है, वही बात तो तूने मुझसे बाज़ार में कही थी।

सा० का ड्रोमियो : मैंने तो अपने पूरे जीवन भर इनसे एक बात भी नहीं की।

सा० का एन्टीफोलस : तो फिर उन्होंने हमारा नाम कैसे जान लिया ? उसीसे तो इन्होंने हमें पुकारा है ! क्या यह सब दैवी प्रेरणा है ?

एड्रियाना : तुम जैसे गम्भीर व्यक्ति के लिये इस तरह अपने दास के साथ बनावटीपन का खेल खेलना कहाँ तक उचित है, कि तुम उसे मेरी बात का विरोध करने के लिये प्रेरित कर रहे हो ? मैं तुम्हें न रोक पाऊँ, यह अपराध चाहे मेरा ही हो, लेकिन इसके साथ मुझसे घृणा करके एक दूसरा अपराध न करना। आओ, मैं तुम्हारी बाँह से लिपट जाऊँ। मेरे प्रियतम ! तुम तो एक तरु हो और मैं एक लता हूँ, जो कमज़ोर होते हुए भी तुम जैसे शक्तिशाली के साथ बँधकर तुम्हारी शक्ति में अपना भाग बँटाती हूँ। अगर किसी चीज में मुझे तुमसे अलग करने की सामर्थ्य है

तो वह बेकार की उगने वाली झाड़ियों में हैं, या पेड़ से लिपटने वाली सदा हरी उस बेल में है जो दूसरे का स्थान छीन कर स्वयं उसपर अपना अधिकार कर लेती है, या काई हमको एक दूसरे से अलग कर सकती है जो किसी तरह के छाँट-सँवार के अभाव में तुम्हारे ऊपर अपनी जड़ें जमाकर तुम्हारे सारे रस को दूषित कर देगी और तुम्हारे भ्रमित चित्त को अपने जीवन का आधार बनायेगी।

सा० का एन्टीफोलस : मुझसे वह यह कह रही है ? उसकी बातों को सुनकर तो मेरा हृदय द्रवित हो गया है। क्या स्वप्न में इस स्त्री के साथ मेरा विवाह हुआ था ? या इस समय मैं अपनी सुप्तावस्था में हूँ और सोचता हूँ कि मैं यह सब कुछ सुन रहा हूँ ? वह कौन-सी भूल है जो हमारे कान और आँखों को भ्रम में डाले हुए है ? जबतक मैं इस निश्चित भ्रम का पता न लगा लूँ ,तब तक इस स्वप्न जैसी बात को सत्य कहकर स्वीकार करता हूँ।

ल्यूसियाना : ड्रोमियो ! जाओ सेवकों से कह दो, खाने की तैयारी कर लें।

सा० का ड्रोमियो : ओह ! माला लाओ मेरी। मैं ऐसा पापी नहीं हूँ। यह तो परियों का देश है। ओह ! बहुत ही घृणित और बुरा देश है। यहाँ तो हम पिशाचियों से बात कर रहे हैं। उल्लू और भूतात्माएँ यहाँ फिरती हैं। अगर हम उनकी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे तो यह सब कुछ यों ही आगे भी चलता रहेगा। वे हमारी साँस खींच लेंगी और हमारे शरीर को कुचल कर काला और नीला बना देंगी।

ल्यूसियाना : तू अपने आपसे ही यह बक-बक करता चला जा रहा है,

बात का जवाब क्यों नहीं देता ? ड्रोमियो ! कामचोर ! तू बिलकुल रेंग-रेंगकर चलने वाला हरामख़ोर सुस्त आदमी है। नशेबाज़ कहीं का !

सा० का ड्रोमियो : स्वामी ! मैं तो पूरी तरह एक भ्रम में अपने आपको ठगा बैठा हूँ ! क्या ऐसा नहीं है ?

सा० का एन्टीफोलस : मेरे विचार से तो तुम्हारा दिमाग़ ठीक है, उसी तरह मेरा भी।

सा० का ड्रोमियो : हाँ स्वामी ! दोनों का दिमाग़ तो ठीक है, लेकिन शक्ल मेरी जैसी है।

सा० का एन्टीफोलस : तेरी अपनी अलग शक्ल है।

सा० का ड्रोमियो : नहीं, मैं तो एक बन्दर हूँ।

ल्यूसियाना : अगर तुम्हारा रूप-परिवर्तन हो भी तो तुम एक गधे ही बन सकते हो।

सा० का ड्रोमियो : यह सच है, श्रीमती मेरे ऊपर सवारी करती हैं और मैं घास की चाहना करता हूँ। अगर ऐसा है, तब तो मैं एक गधा हूँ, नहीं तो ऐसा कभी नहीं हो सकता। लेकिन जैसे अच्छी तरह ये मुझे जानती हैं इतना ही मुझे भी इनको जानना चाहिये।

एड्रियाना : चलो, चलो, अब अधिक देर तक मैं इस तरह मूर्ख नहीं बनी रहूँगी कि आँख में उँगली डालूं और रोऊँ जबकि यह आदमी और इसके स्वामी दोनों मिलकर मेरे दुःख का उपहास करते हुए मेरी उपेक्षा करते हैं।

आइये श्रीमान् ! खाना खाने चलिये। ड्रोमियो ! तुम द्वार पर रहो।

प्रियतम ! आज मैं तुम्हारे साथ ऊपर चलकर खाना खाऊँगी और फिर आपने जो हज़ारों बेकार की-सी चालें चली हैं एक-एक

को आपके मुँह से ही स्वीकार कराऊँगी ।

ड्रोमियो, अगर कोई तुम्हारे स्वामी के विषय में पूछें तो कहना कि वे घर से बाहर कहीं खाना खाने गये हैं और देखो, किसी आदमी को भी अन्दर मत घुसने देना ।

आओ बहिन, ड्रोमियो चौकीदार का काम अच्छी तरह कर लेगा ।

सा० का एन्टीफोलस : मैं पृथ्वी पर हूँ या आकाश में या कहीं नरक में ? सो रहा हूँ या जाग रहा हूँ, पागल हूँ या अपनी ठीक हालत में हूँ ? ये मुझे जानती हैं, तो क्या मैं अपने वेश को स्वयं नहीं पहचानता ? अच्छा, अब जो कुछ ये कहेंगी मैं भी वही करूँगा और इस तरह बात को चलाता रहूँगा और इस भ्रमपूर्ण स्थिति में जो कुछ भी सामने आयेगा उसको मानता चला जाऊँगा ।

सा० का ड्रोमियो : स्वामी ! क्या मैं द्वार पर द्वारपाल की स्थिति में खड़ा हो जाऊँ ?

एड्रियाना : हाँ, और किसीको अन्दर मत घुसने देना, नहीं तो मैं तुम्हारा सिर तोड़ दूंगी ।

ल्यूसियाना : चलो-चलो एन्टीफोलस ! खाने के लिये काफ़ी देर हो चुकी है ।

[प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

[इफीसस के एन्टीफोलस का अपने सेवक ड्रोमियो, ऐंजिलो सुनार तथा व्यापारी बैल्थेजर के साथ प्रवेश

इफीसस का एन्टीफोलस : श्रेष्ठ श्रीमन्त ऐंजिलो ! आप हम सभी को क्षमा कर दीजिये। जब मैं ठीक समय पर नहीं पहुँचता हूँ तो मेरी पत्नी गुस्सा हो जाती है। आप कह दीजिये कि मैं आपकी दुकान पर उनकी जंज़ीर को बनवाने बैठ गया था और यह भी कह दीजिये कि कल आप इसे घर पहुँचा देंगे। लेकिन यहाँ तो एक ऐसा बदमाश है जो अवश्य मुझे नीचा दिखायेगा। यह मुझसे बाज़ार में मिला था और मैंने इसको पीटा था और एक हज़ार स्वर्ण-मुद्राओं की चोरी का अभियोग इस पर लगाया था। कहता है, कि मैंने अपनी पत्नी और घर की बात भी झुठा दी थी।

नशेबाज़ कहीं का, क्या मतलब है तेरा ऐसी बातों से ?

इफी० का ड्रोमियो : कह लीजिये श्रीमान्, जो मन में आये कह लीजिये, लेकिन जो मैं जानता हूँ वह निश्चयपूर्वक जानता हूँ कि आपने बाज़ार में मुझे पीटा था। इसके प्रमाणस्वरूप मैं आपका हाथ दिखा सकता हूँ। अगर यह खाल लिखने योग्य होती और आपके थप्पड़ स्याही होते तो आपका हस्तलेख ही आपको, जो कुछ मैं सोचता हूँ, सब कुछ बता देता।

इफी० का एन्टीफोलस : मेरे विचार से तो तू एक गधा है।

इफी० का ड्रोमियो : हाँ, हाँ, जरूर, जो दुर्दशा मेरी हुई है और जो थप्पड़ मैंने सहे हैं, उनसे ऐसा ही मालूम देता है जो फिर अब कोई मुझे लात देगा तो मैं भी उसे लात दूँगा और इस स्थिति में अब आप मेरी एड़ियों से बचते रहिये। गधे से सावधान रहना।

इफी० का एन्टीफोलस : श्रीमान् बैल्थेजर ! आप चिन्तित हैं। परमात्मा से प्रार्थना करिये कि मेरी सहृदयता के उत्तरस्वरूप हमारे बीच पूर्ण प्रसन्नता का निवास हो और यहाँ मैं आपका अच्छा स्वागत कर पाऊँ।

बैल्थेजर : श्रीमान् ! मैं आपके सभी स्वादिष्ट पदार्थों का उतना मूल्य नहीं समझता, जितना आपके प्रेमपूर्ण स्वागत का।

इफी० का ऐन्टीफोलस : ओह श्रीमान् बैल्थेजर ! गोश्त हो या मछली, खाने के समय यदि पूरी तरह स्वागत किया जाय तो खाने में जो मज़ा आये—ऐसा तो और कहीं मिलना बहुत ही मुश्किल है।

बैल्थेजर : थोड़ा-सा हल्ला-गुल्ला हो और ऊँचे स्तर पर स्वागत हो, तभी अच्छी मजेदार दावत होती है।

इफी० का एन्टीफोलस : जी हाँ, कंजूस मेज़बान के लिये, और फिर साथ ही उतने ही अधिक उदार हृदय वाले मेहमान चाहियें। लेकिन यद्यपि मेरा खाना मामूली तरह का है, फिर भी मेरे प्रति अपना प्रेम दिखाकर उसको स्वीकार कीजिये। स्वागत का शोर-गुल तो इससे अच्छा आपको और जगह भी मिल जायगा, लेकिन इससे अच्छा हृदय नहीं मिलेगा। अरे थोड़ा शान्त रहिये। मेरे घर का द्वार बन्द है। जाओ ड्रोमियो, कहकर इसे खुलवाओ

इफी० का ड्रोमियो : 'मौड', 'ब्रिजैट', 'मारियन', 'सिसली', 'जलियन' 'जिन'।

सा० का ड्रोमियो : (**अन्दर से**) अबे ओ पतले-दुबले भाँड, नामर्द मुर्गे, बेवकूफ, गधे, शठ कहीं का ! या तो यहाँ से चला जा और नहीं तो दरवाजे के बाहर बैठ जा। तू इतने सारे नाम बोल गया है तो क्या तू औरतों का नाम लेकर जादू करता है ? एक आदमी एक से अधिक कब हुआ है, जा भाग जा यहाँ से ।

इफी० का ड्रोमियो : हमारा द्वारपाल आज यह कौन मूर्ख बन बैठा है ? स्वामी गली में खड़े हैं।

सा० का ड्रोमियो : (**अन्दर से**) उसे वहीं ले जाओ, जहाँ से वह आया है, जिससे उसके पैरों को सर्दी न लग जाय ।

इफी० का एन्टीफोलस : कौन बात कर रहा है अन्दर वहाँ ? कौन है ? खोलो दरवाजा ।

सा० का ड्रोमियो : (**अन्दर से**) ठीक कहते हैं श्रीमान् ! मैं तो आपको बताऊँगा कब और आप मुझे बतायेंगे किसलिये ।

इफी० का एन्टीफोलस : किसलिये ? मेरे खाने के लिये । मैंने आज खाना नहीं खाया है ।

सा० का ड्रोमियो : और न आपको आज यहाँ खाना चाहिये। जाइये, फिर कभी आ सकें तो आ जाइये ।

इफी० का एन्टीफोलस : कौन है तू, जो मुझे अपने ही घर में नहीं घुसने देता है ?

सा० का ड्रोमियो : (**अन्दर से**) इस समय तो यहाँ का द्वारपाल हूँ श्रीमान् ! ड्रोमियो मेरा नाम है।

इफी० का ड्रोमियो : ओह धूर्त, बदमाश, तूने मेरा पद और नाम दोनों मुझसे चुरा लिये। इस पद से मुझे कभी भी इज्जत नहीं मिली और नाम से तो और भी बदनामी मिली। अगर मेरी जगह आज तू ड्रोमियो होता तो तू एक नाम के लिये अपनी शक्ल बदल

लेता और इस नाम को एक गधे से बदल लेता।

लूसी : (अन्दर से) क्या शोर-गुल है वहाँ ड्रोमियो ? दरवाजे पर कौन लोग हैं ?

इफी० का ड्रोमियो : लूसी ! स्वामी को अन्दर जाने दो।

लूसी : (अन्दर से) नहीं, बिलकुल नहीं। वे बहुत देर करके आते हैं, यही बात अपने स्वामी से कह दो।

इफी० का ड्रोमियो : ओ भगवान, अब तो मैं जरूर हँसूंगा। अब मेरे कहावत के हमले से अपनी रक्षा करो। अब यहाँ बड़े मजे से कटेगी।

लूसी : अच्छा, तो मेरा दूसरा हमला सँभालो कब कटेगी ? कुछ बता सकते हो ?

सा० का ड्रोमियो : (अन्दर से) अगर तेरा नाम लूसी है तो लूसी, बड़ा अच्छा जवाब दिया तूने।

इफी० का एन्टीफोलस : ढीठ लड़की ! ज़रा मेरी बात भी सुनो। मेरा विश्वास है, तुम हमें अन्दर चले जाने दोगी।

लूसी : (अन्दर से) मैंने तुमसे पूछने का विचार किया था।

सा० का ड्रोमियो : (अन्दर से) और तुमने कहा—था नहीं।

इफी० का ड्रोमियो : इसी तरह से सहायता मिले। खूब मारा। थप्पड़ का जवाब थप्पड़ से ही दिया है।

इफी० का एन्टीफोलस : बेवकूफ़, मुझे अन्दर जाने दे।

लूसी : (अन्दर से) किसके लिये, क्या आप यह बता सकते हैं ?

इफी० का ड्रोमियो : स्वामी ! ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाइये।

लूसी : (अन्दर से) जब तक यह दर्द से कराह न उठे तब तक खटखटाने दो उन्हें।

इफी० का एन्टीफोलस : ढीठ लड़की ! अगर मैंने मार-मार कर दरवाज़ा तोड़ दिया, तो फिर तुम इसके लिये पुकारोगी।

लूसी : (**अन्दर से**) इस सबके लिये किस चीज़ की ज़रूरत है, मालूम है ? कठघरे की ।

एड्रियाना : (**अन्दर से**) कौन है दरवाजे पर, जो इस तरह शोर मचा रहा है ?

सा० का ड्रोमियो : (**अन्दर से**) सच कहता हूँ, आपके इस शहर में तो इन बदतमीज लड़कों से मुसीबत खड़ी हो गई है ।

इफी० का एन्टोफोलस : क्या तुम वहाँ मेरी ही पत्नी हो ? तुम पहले भी आ सकती थीं ।

एड्रियाना : (**अन्दर से**) तुम्हारी पत्नी ? धूर्त, बदमाश कहीं के ! चले जाओ, इस दरवाज़े से भाग जाओ ।

इफी० का ड्रोमियो : स्वामी ! अगर आप थोड़ी तकलीफ करें तो इस औरत की, धूर्त कहने के अपराध में, पूरी तरह पिटाई हो सकती है ।

सुनार : श्रीमान् ! न तो यहाँ किसी तरह का स्वागत है और न उसकी तैयारी का शोर-गुल है । हम तो किसी एक से ही प्रसन्न हो जायेंगे ।

बैल्थेजर : कौन सबसे अच्छा है, इस पर वाद-विवाद करने में हम किसीसे भी अलग नहीं होंगे ।

इफी० का ड्रोमियो : स्वामी ! वे दरवाज़े पर खड़े हुए हैं । आप उनसे इधर आने के लिए कह दीजिये ।

इफी० का एन्टीफोलस : कोई न कोई हवा में ऐसी बात ज़रूर है । जिसके कारण हम अन्दर नहीं जा पा रहे ।

इफी० का ड्रोमियो : स्वामी ! आप ऐसा तो तब कहते जब आपके शरीर के कपड़े पतले होते । अन्दर आपका खाना बिलकुल गरम रखा है और आप यहाँ ठंड में खड़े हैं । आदमी को इस तरह

बेचा और खरीदा जाय, इस तरह के व्यवहार से तो वह हरिण के समान उसी तरह खूंख्वार हो जायेगा, जैसे वह रति-क्रीड़ा के समय हो जाता है।

इफी० का एन्टीफोलस : जाओ, मेरे लिये कोई चीज़ उठाकर ले आओ ! मैं इस दरवाज़े को तोड़कर खोल देता हूँ।

सा० का ड्रोमियो : (**अन्दर से**) तोड़ो यहाँ किसी दरवाज़े को, और मैं तुम्हारे इस धूर्त का सिर तोड़ दूंगा तब।

इफी० का ड्रोमियो : श्रीमान् ! आपसे कोई आदमी बातें तो तोड़ सकता है। और बातें खाली हवा जैसी होती हैं। और हाँ, आपके मुँह पर ही उन्हें तोड़ता है, पीछे से नहीं तोड़ता है वह।

सा० का ड्रोमियो : (**अन्दर से**) इसका मतलब है, तू अपने आपको ही तुड़वाना चाहता है गुलाम !

इफी०का ड्रोमियो : अब तेरे साथ बहुत कुछ हो गया ! मेरी प्रार्थना मानकर अब तो अन्दर चले जाने दे !

सा० का ड्रोमियो : (**अन्दर से**) फाख्ताओं के जब पर नहीं रहेंगे और मछलियों के शरीर से वे भाग मिट जायेंगे जिनके सहारे वे पानी में तैरती हैं, तभी यह हो सकता है।

इफी० का एन्टीफोलस : अच्छा तो मैं अब तोड़कर ही रहूँगा ! जाओ मेरे लिये कहीं से झुकी हुई लोहे की छड़ माँग कर ले आओ।

इफी० का ड्रोमियो : बिना परों का कौवा[1], स्वामी ! क्या आपका

---

१. Crow : इस शब्द के दो अर्थ हैं--कौवा और सिरे पर मुड़ी हुई लोहे की छड़। इफीसस का एन्टीफोलस इस शब्द का दूसरे अर्थ में प्रयोग करता है लेकिन इफी० का ड्रोमियो इसका पहला अर्थ लगाता है। बस इसी 'पन' (द्व्यर्थक शब्द) के प्रयोग से मज़ाक बन जाता है। हमने शब्दार्थ ही दिये हैं। अंग्रेजी भाषा का अपना एक सौन्दर्य है, उसे हिन्दी में उसी प्रकार लाना कठिन है।

यही मतलब है ? क्योंकि बिना पंखों की मछली के लिये तो बिना पंखों की फाख्ता है, फिर अगर एक कौवा ही अन्दर जाने में हमारी मदद करे तो फिर मैं झगड़ा करूँगा।

इफी० का एन्टीफोलस : चला जा यहाँ से और मेरे लिये कौवा नहीं लोहे की छड़ी ला।

बैल्थेजर : धैर्य रखिये श्रीमान् ! ऐसा मत करिये ! यहाँ किसी तरह का झगड़ा करना आपकी इज्ज़त के खिलाफ बात होगी और फिर इससे आपकी पत्नी के पवित्र चरित्र पर भी लोगों को सन्देह करने का अवसर मिलेगा। एक शब्द में ही समझ लीजिये कि आपका इतने दिनों का अच्छा अनुभव, आपकी पत्नी की गम्भीरता, गुण, आयु और शिष्टता यह दावा करते हैं कि अवश्य कोई ऐसा कारण है जिसके बारे में आपको कुछ पता नहीं है और संदेह न करिये श्रीमान् ! वे स्वयं इसका कुछ न कुछ कारण अवश्य बतायेंगी कि उन्होंने आपके लिये क्यों दरवाज़ा बन्द करवा दिया था। अब आप मेरी बात मानिये और शान्ति से यहाँ से चले चलिये। खाने का सवाल है तो चलिये हम सभी 'टाइगर' में चलकर खाना खायेंगे और शाम के करीब आप स्वयं अकेले ही इस विचित्र प्रकार की रोक-थाम का कारण मालूम करने आइये। अगर आपने इस समय, जबकि रास्तों में आदमियों की भीड़ की भीड़ आ-जा रही है, बलपूर्वक दरवाजा तोड़ दिया तो इसके बारे में लोग गन्दी और वेहूदी बातें बनायेंगे। फिर अगर आम लोगों के बीच आपकी कभी न गिरने वाली इज्जत के खिलाफ बातें शुरू हो गईं तो फिर समझ लीजिये कि आपके मरने के बाद आपकी कब्र के साथ भी यह बदनामी

लगी रहेगी। क्योंकि बदनामी एक के पीछे एक चलती ही चली जाती है और जहाँ एक बार घर कर लेती है वहाँ से कभी नहीं जाती।

इफी० का एन्टीफोलस : तुमने अपनी बातों से सफलता पाई है। मैं चुपचाप यहाँ से लौट जाऊँगा और चाहे उन्होंने कितना ही मेरा उपहास किया हो, फिर भी मैं प्रसन्न रहूँगा। मैं एक औरत को जानता हूँ, जो बड़ी अच्छी बातें करती है, सुन्दर और चतुर है। उसके चित्त में आवेश भी है, लेकिन वैसे बड़े ही नम्र स्वभाव की है। वहाँ हम खाना खायेंगे। इस औरत ने, मेरा मतलब अपनी पत्नी से है, प्रायः मुझसे इसी तरह कटु व्यवहार करके मुझे घर से निकाल दिया है। (लेकिन मैं बिना किसी तरह के फल की इच्छा के यह कहता हूँ) खाना खाने के लिये हम उसी के पास जायेंगे। आप घर जाइये और वह जंज़ीर ले आइये। अब तक तो वह बन गई होगी, मेरा अनुमान है। उसे आप 'पौर्पेन्टाइन' ले आइये, क्योंकि वहीं घर है। उस जंज़ीर को मैं अपनी मेजबान को दूंगा (चाहे इसका उपयोग मेरी पत्नी को परेशान करने के अलावा और कुछ न हो)। श्रीमान्! शीघ्रता करिये! अगर मेरे लिये मेरे स्वयं के दरवाज़े बन्द हैं तो मैं दूसरी जगह जाकर दरवाज़े खटखटाऊँगा और देखूंगा कि क्या वहाँ भी मुझे वही उपेक्षा और घृणा मिलती है।

सुनार : कुछ देर पश्चात में आपको उसी जगह पर मिलूंगा।

इफी० का एन्टीफोलस : ठीक है, यह मज़ाक मुझे कुछ मँहगा तो अवश्य पड़ेगा।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[इफी० के एन्टीफोलस के घर में ल्यूसियाना तथा सा० के एन्टीफोलस का प्रवेश]

ल्यूसियाना : तो क्या, यह सम्भव है कि आप पूरी तरह यह भूल चुके हैं कि आप किसीके पति हैं ? एन्टीफोलस ! क्या प्रेम के इस उच्छ्वास-काल में ही आपके प्रेम-सम्बन्ध दूषित हो जायेंगे ? क्या मकानों के भीतर प्रेम इस तरह नष्ट हो जायेगा ? अगर आपने मेरी बहिन से उसके धन के पीछे विवाह किया है तो फिर उस धन के लिये ही उसके साथ अधिक सहृदयतापूर्ण व्यवहार करिये। या अगर आप किसी अन्य के प्रति आकर्षित हैं तो इसको सामने खुले रूप में प्रकट तो मत करिये। अपने झूठे प्रेम को अपने कौशल के द्वारा अपने सच्चे रूप में मत प्रकट होने दीजिये। ऐसा अवसर मत पैदा करिये कि मेरी बहिन आपकी दृष्टि से आपकी वास्तविकता जान जाये। अपने मुँह से कभी ऐसी लज्जा-जनक बात मत कहिये। अपनी आकृति को मधुर बना लीजिये, मधुरता से ही बोलिये और इससे अपनी विश्वासघाती प्रवृत्ति को भी इस आकर्षण के नीचे छिपा लीजिये। आपके दोष ऐसे मालूम दें मानो वे आपके गुणों के अग्रदूत हैं। आपके हृदय में चाहे कैसा भी दूषित विचार हो लेकिन फिर भी बाहर से पवित्र और मधुर दिखाई दीजिये। पाप को भी एक पवित्र सन्त का-सा कार्यवाहन सिखा दें। झूठे बनकर रहिये लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से। क्या आवश्यकता है कि मेरी बहिन को इसका परिचय कराया जाये ? कौन-सा ऐसा साधारण से साधारण चोर होगा जो अपने ही अपराध को पुकार-पुकार कर सुनायेगा ? एक तो वैवाहिक सम्बन्धों की उपेक्षा करके अपनी प्रिया से दूर जाना और फिर

अपनी दृष्टि के द्वारा खुले रूप में इस विश्वासघात का परिचय देना, यह तो दूना अपराध होगा। अगर कोई आदमी पूरी सावधानी के साथ अपना दुराचार छिपा जाय तो कम से कम इससे उसका अच्छा नाम तो बचा रहता है। जिस समय दूषित कार्यों के साथ दूषित बातें भी निकलने लगती हैं तो दोष दूना बढ़ जाता है।

हाय ! निस्सहाय स्त्रियाँ ! (कितने शीघ्र विश्वास करने वाली होती हैं) बस हमें तो केवल यह विश्वास दिला दो कि आप हमें प्रेम करते है। यद्यपि दूसरों का पूरे हाथ पर अधिकार है, हमें केवल बाँह ही दिखा दोजिये। यह तो आपके साथ-साथ ही फिरने वाली हैं और आप हमें कैसे भी फिरा सकते हैं। तभी कहती हूँ सुहृद् भाई ! फिर अन्दर चलिये और मेरी बहिन को धीरज बँधाइये। उसको अपनी पत्नी कहकर उसके चित्त को प्रसन्न कीजिये। जबकि थोड़े मीठे बोलने और खुशामद करने से किसी तरह का झगड़ा और विद्वेष दूर हो सकता हो तो थोड़ा बनावटीपन दिखाना भी श्रेष्ठ कार्य गिना जाता है।

सा० **का एन्टीफोलस** : मधुरे ! इसके अलावा तुम्हारा क्या नाम है, मैं कुछ भी नहीं जानता। यह भी नहीं जानता कि किस आश्चर्य से तुमने मेरा नाम जान लिया है। तुम्हारा यह सौन्दर्य, जिसका प्रदर्शन तुम नहीं करती हो, तुम्हारे विचार से वह पृथ्वी के आश्चर्य से कम है, लेकिन सच ही वह दैवी छवि से कहीं अधिक है।

प्रिये ! मुझे सोचना और बोलना सिखा दो। मेरी इस मूर्ख बुद्धि को जो अनेक भूलों के बीच फँसी हुई है और जो बहुत ही क्षुद्र और शिथिल है, अपनी इन भ्रमपूर्ण बातों का गूढ़ार्थ समझा दो।

मेरी आत्मा के पवित्र सत्य के विरुद्ध, तुम क्यों प्रयत्न करती हो कि यह एक अपरिचित दिशा में भटक जाये ? क्या तुम दैवी आत्मा हो ? क्या तुम फिर नये रूप से मेरी निर्माण करोगी ? तो फिर यह भी कर लो, मैं तुम्हारी शक्ति के सामने अपने आपको समर्पित करता हूँ । लेकिन उसके लिये मैं मैं ही हूँ । तब मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि तुम्हारी दुःखी बहिन मेरी पत्नी नहीं है और न उसके साथ मेरे किसी प्रकार के वैवाहिक सम्बन्ध है । इससे कहीं अधिक मेरा आकर्षण तुम्हारे प्रति है ।

ओ सुन्दर और मधुर जलकन्या ! अपने इस मधुर गीत से मुझे इस तरह मत लुभाओ कि मैं तुम्हारी बहिन के उस आँसुओं के ज्वार में पूरी तरह डूब जाऊँ ।

ओ जलपरी ! अपने लिये इस मधुर संगीत को छेड़ो, मैं अपने आपको इसमें डुबो दूंगा । रजत लहरों के ऊपर अपने इन स्वर्ण की-सी कान्ति वाले केशों को फैला दो और मैं एक अधखिली कली की तरह तुम्हें उठा लूंगा और वहीं ठहर जाऊँगा और उस महान् अद्‌भुत कल्पना में सोचूंगा कि जिसके पास मृत्यु के ऐसे साधन हैं, वह तो मृत्यु से लाभ ही उठाता है । अगर प्रिया जल के भीतर प्रवेश करे तो प्रेमी भी इतना हल्का हो कि उसीके साथ डूब जाये ।

ल्यूसियाना : आप इस तरह की बातें कर रहे हैं, क्या पागल हो गए हैं ?

सा० का एन्टीफोलस : पागल नहीं लेकिन आश्चर्यचकित; कैसे, यह मैं नहीं जानता ।

ल्यूसियाना : यह आपकी आँख की कोई खराबी है ।

सा० का एन्टीफोलस : इसलिये कि मैंने पास आती तुम्हारी किरणों

के सामने दृष्टि गड़ा दी थी, मेरी सुन्दर सूर्य-सी प्रिया !

ल्यूसियाना : तभी देखिये, जब आपको देखना उचित हो, इसीसे आपकी दृष्टि का दोष दूर हो जायेगा।

सा० का एन्टीफोलस : जितना रातभर देखते रहना है, उतना ही अच्छा एक बार अपनी प्रिया को निमिषमात्र देख लेना है।

ल्यूसियाना : आप मुझे अपनी प्रिया कहकर क्यों पुकारते हैं ? मेरी बहिन से यह कहिये।

सा० का एन्टीफोलस : तुम्हारी बहिन की बहिन से ?

ल्यूसियाना : यानी मेरी बहिन से।

सा० का एन्टीफोलस : नहीं तुम्हीं हो, तुम्हीं मेरी प्रिया हो ! मेरी दृष्टि की उज्ज्वल दृष्टि तुम्हीं हो। तुम्हीं मेरी आत्मा की और भी अधिक स्नेहपूर्ण आत्मा हो। मेरा भोजन, भाग्य, और मेरी मधुर आशाओं की देवी, इस पृथ्वी पर मेरे स्वर्ग के समान और मेरे स्वर्ग का अधिकार सब कुछ तुम्हीं हो।

ल्यूसियाना : यह सब कुछ मेरी बहिन है, और कौन हो सकती है ?

सा० का एन्टीफोलस : तो फिर अपने आपको ही मधुर बहिन कहकर पुकारो, क्योंकि तुम्हारी सत्ता में मेरी सत्ता है। मैं तुम्हें ही प्रेम करूँगा और तुम्हारे साथ ही जीवन-निर्वाह करूँगा। अभी तक तुम्हारा कोई पति नहीं है, और न मेरी कोई पत्नी। मुझे अपना हाथ दो।

ल्यूसियाना : ओह शान्त रहिये श्रमान्, ठहरिये ! मैं अपनी बहिन की अनुमति लेने के लिये उसको बुला लाती हूँ।

[प्रस्थान]

[सायरेक्यूसा के ड्रोमियो का प्रवेश]

सा० का एन्टीफोलस : कहो, कहो ड्रोमियो ! क्या बात है ? इतने

वेग से तुम कहाँ भागे जा रहे हो ?

सा० का ड्रोमियो : क्या आप मुझे पहचानते हैं श्रीमान् ? क्या मैं सचमुच ड्रोमियो ही हूँ ? क्या मैं आपका सेवक ही हूँ ? क्या मैं कोई दूसरा व्यक्ति नहीं हूँ ?

सा० का एन्टीफोलस : हाँ हाँ, तुम ड्रोमियो हो, मेरे ही सेवक हो और स्वयं को छोड़कर कोई अन्य व्यक्ति नहीं हो।

सा० का ड्रोमियो : मैं तो एक गधा हूँ। मैं एक स्त्री का सेवक हूँ और स्वयं के अलावा कोई अन्य व्यक्ति हूँ।

सा० का एन्टीफोलस : कौन-सी स्त्री के सेवक ? और स्वयं को छोड़कर अन्य व्यक्ति कैसे ?

सा० का ड्रोमियो : हाँ श्रीमान् ! मैं अपने आपके आलवा कोई और हूँ। मैं एक स्त्री का दास हूँ। वही जिसका मेरे ऊपर अधिकार है और जो मेरा वेग से पीछा कर रही है और जो मुझे हर तरह से अपना दास बनाकर रखेगी।

सा० का एन्टीफोलस : क्या अधिकार बताती है वह तुम्हारे ऊपर ?

सा० का ड्रोमियो : श्रीमान् ! ऐसा ही अधिकार जैसा आप अपने घोड़े पर बतायें, और वह एक जंगली पशु की तरह मुझे, अपना दास बना लेगी। यह बात नहीं कि मैं एक जंगली पशु हूँ, इसलिए वह मुझे अपने अधिकार में ले लेगी, बल्कि वह स्वयं जंगली पशु से कम नहीं है; इसीलिये वह मुझे अपना दास बना लेगी।

सा० का एन्टीफोलस : वह कौन है ?

सा० का ड्रोमियो : बड़े ही अच्छे शरीर की है, जिसको देखकर एक बार तो आदर से सिर झुक जाय और ऐसी है जिसको कोई आदमी बिना उच्च सम्मान दिखाये नहीं बोल सकता। इस जोड़े में

मेरा भाग्य बड़ा कमज़ोर है लेकिन फिर भी वह तो बिलकुल आश्चर्यपूर्ण मोटी शादी है।

सा० का एन्टीफोलस : क्या मतलब तुम्हारा मोटी शादी से ?

सा० का ड्रोमियो : श्रीमान् ! रसोईदारिन है और बिलकुल पूरी तरह चर्बी है। मेरी समझ में नहीं आता कि सिवाय इसके कि मैं उसको एक चिराग़ बना दूँ और उसीकी रोशनी में उससे दूर भाग जाऊँ, और क्या उसका उपयोग कर सकता हूँ ! मैं दृढ़तापूर्वक कहता हूँ कि उसके कपड़े और उनके भीतर उसकी चर्बी पूरे जाड़ों भर जल सकती है और अगर वह कयामत के दिन तक जीवित रही तो समझ लीजिये पूरी दुनिया से एक हफ़्ता ज्यादा उसे जलने में लगेगा।

सा० का एन्टीफोलस : उसकी शक्ल-सूरत कैसी है ?

सा० का ड्रोमियो : बिलकुल मेरे जूते जैसी काली, लेकिन चेहरा ऐसा है कि इस तरह कोई भी चीज़ इतनी साफ़ नहीं रखी जा सकती। किसलिये ? उसके शरीर से इतना पसीना निकलता है कि उससे जो कीचड़ हो जाती है उसे कोई भी आदमी जूते पहनकर ही पार कर सकता है।

सा० का एन्टीफोलस : इस ख़राबी को तो पानी ही ठीक कर देगा।

सा० का ड्रोमियो : जी नहीं, यह तो प्राकृतिक है। नूह की बाढ़ इसे नहीं कर सकी।

सा० का एन्टीफोलस : क्या नाम है उसका ?

सा० का ड्रोमियो : नैल है श्रीमान् ! लेकिन उसका नाम और तीन भूखण्ड यानी पैंतालीस इञ्च और तीन चौथाई पृथ्वी उसके एक पुट्ठे से दूसरे पुट्ठे तक नापने के लिये पर्याप्त नहीं होगी।

सा० का एन्टीफोलस : तब तो वह कुछ चौड़ी है ?

सा० का ड्रोमियो : एक पुट्ठे से दूसरे पुट्ठे तक जितनी दूरी है, उससे अधिक दूरी सिर और पैरों के बीच नहीं है। वह तो बिलकुल पृथ्वी की तरह गोल है। उसके भीतर तो मुझे देश मिल सकते हैं।

सा० का एन्टीफोलस : लेकिन उसके शरीर के किस हिस्से में आयर्लैंड स्थित है ?

सा० का ड्रोमियो : उसके पुट्ठों में श्रीमान् ! दलदल देखकर मैंने इसका पता लगा लिया था।

सा० का एन्टीफोलस : स्कॉटलैंड कहाँ है ?

सा० का ड्रोमियो : उसके हाथ पर है। उसको बेकार बंजर जैसा पाकर मैंने इसका पता लगा लिया था।

सा० का एन्टीफोलस : फ्रांस कहाँ है ?

सा० का ड्रोमियो : उसके माथे पर। बिलकुल अपने ही उत्तराधिकारी के विरुद्ध युद्ध करने के लिये अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित और पीछे फिरता हुआ।

सा० का एन्टीफोलस : इङ्गलैंड कहाँ है ?

सा० का ड्रोमियो : मैंने उन सफेद खली की पहाड़ियों को देखा, लेकिन मुझे सफेदी उनमें कहीं नहीं मिली, लेकिन मेरा अनुमान है वह उसकी ठोड़ी पर स्थित है; ठीक उस खारी बहती हुई नाक के पास, जो इसके और फ्रांस के बीच पड़ती है।

सा० का एन्टीफोलस : स्पेन कहाँ है ?

सा० का ड्रोमियो : इसको तो मैंने नहीं देखा, विश्वास करिये, लेकिन मैंने उसकी साँस में उसकी गर्मी का अनुभव किया था।

सा० का एन्टीफोलस : अमेरिका, इन्डीज़ कहाँ हैं ?

सा० का ड्रोमियो : वह तो श्रीमान् ! ठीक उसकी नाक पर हैं, बस

चारों ओर लाल, नीलम रत्न आदि से सुशोभित है, जो धन उस स्पेन की गर्म साँस के आगे उसने समर्पित कर दिया है, उसने एक पूरा जहाज़ी बेड़ा उसकी नाक पर लंगर डालने के लिये भेज दिया था।

सा० का एन्टीफोलस : बेल्जिया, नीदरलैंडस कहाँ हैं ?

सा० का ड्रोमियो : ओह, श्रीमान् क्या बताऊँ, इतने नीचे तक तो मैंने नहीं देखा। इस सबका निष्कर्ष यह है कि इस नौकरानी ने या मैं इसके बारे में कहूँ इस जादूगरनी डायन ने मुझ पर अधिकार जमाया, ड्रोमियो कहकर मुझे पुकारा और शपथ खाने लगी कि मेरा और इसका सम्बन्ध तो निश्चित हो चुका है और कहने लगी कि बताओ तुम्हारे शरीर पर क्या-क्या गुप्त निशान हैं। जैसे मेरे कंधे का निशान, मेरी गर्दन में मस्सा, मेरे बाँयें हाथ में बड़ी-सी ठेक। यह सुनकर तो मैं आश्चर्य में पड़ गया और उसके पास से ऐसा भागा जैसे किसी डायन के पास से। सच कहता हूँ, यदि मेरी छाती में दम और विश्वास नहीं होता और मेरा हृदय फौलाद का न बना होता तो वह तो मुझे रसोई का कुत्ता[1] बन देती और फिर मुझसे उस पहिये को चलवाती।

सा० का एन्टीफोलस : जाओ, शीघ्र यहाँ से अभी सड़क की ओर चले जाओ। अगर किनारे की तरफ़ से हवा चली तो मैं आज रात इस शहर में नहीं ठहरूँगा। अगर कोई जहाज़ यहाँ से जाने वाला हो तो मेरे पास बाज़ार में आ जाना। जब तक तुम लौटोगे तब तक मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा। अगर हरएक आदमी हमें जानता है

---

१. Curtal dog **पहले बड़ी-बड़ी रसोइयों में कुत्ते काम में लाये जाते थे, जो उस छड़ को एक पहिये के द्वारा चारों तरफ फिराया करते थे जिस पर गोश्त पकता था।**

और हम किसी को नहीं जानते हैं तो यहाँ से अपना सामान बाँधकर चले जाने का वक्त है अब।

सा० का ड्रोमियो : जिस तरह एक आदमी एक रीछ से अपने प्राणों की रक्षा करने के लिये भागता है उसी तरह मैं भी उस औरत से दूर भागता हूँ, जो मेरी पत्नी बनती।

[प्रस्थान]

सा० का एन्टीफोलस : इस स्थान पर डायनों को छोड़कर और कोई नहीं रहता, इसलिये अब ठीक समय है कि मैं यहाँ से दूर चला जाऊँ। वह स्त्री जो मुझे अपना पति कहकर पुकारती है, उसको तो पत्नी के दृष्टि से देखते ही मेरा हृदय घृणा से फिर जाता है। लेकिन उसकी उस बहिन ने जो अत्यंत सुन्दर और मधुर स्वभाव की है, जिसके हाव-भाव और बातचीत में एक अद्‌भुत आकर्षण है, मुझे लगभग स्वयं के प्रति विश्वासघाती बना दिया है। लेकिन अब मैं उस जलकन्या के मधुर संगीत की ओर से अपने कान मूंद लूंगा, जिससे मैं स्वयं के प्रति अपराध का दोषी न ठहराया जा सकूँ।

[**सुनार ऐंजिलो का जंजीर लिये हुए प्रवेश**]

सुनार : श्रीमान् एन्टीफोलस !

सा० का एन्टीफोलस : हाँ ! यह तो मेरा नाम है।

सुनार : मैं अच्छी तरह जानता हूँ श्रीमान् ! लीजिये यह जंजीर रही। मैंने पौर्पेन्टाइन पर ही आपसे मिलने का विचार किया था, लेकिन क्या बताउँ, जंजीर तैयार नहीं हुई थी, इसलिये मुझे अधिक देर लग गई।

सा० का एन्टीफोलस : क्या चाहते हैं आप ? मैं क्या करूँ इससे ?

सुनार : जो भी आपकी इच्छा हो श्रीमान् ! मैंने तो आपके लिये इसे बनाकर तैयार कर दिया है।

सा० का एन्टीफोलस : मेरे लिये बना दिया है श्रीमान् ! लेकिन मैंने तो इसके लिये नहीं कहा था।

सुनार : एक बार, दो बार नहीं, बल्कि बीसों बार आपने कहा था। इसको लेकर घर जाइये और इससे अपनी पत्नी को प्रसन्न कीजिये। फिर शीघ्र ही खाने के समय मैं आपके पास आऊँगा और इसकी कीमत ले लूँगा।

सा० का एन्टीफोलस : मेरी यह प्रार्थना है श्रीमान् ! कि कीमत तो आप इसकी अभी ले जायँ, क्योंकि मुझे डर है कि फिर न तो आपको यह जंजीर कभी दिखाई देगी और न कभी इसकी कीमत मिलेगी।

सुनार : आप बड़े ही दिलचस्प आदमी हैं श्रीमान् ! अच्छा नमस्ते।

[प्रस्थान]

सा० का एन्टीफोलस : मैं नहीं कह सकता कि इसके बारे में मैं क्या सोचूं, लेकिन यह मैं अवश्य सोचता हूँ कि शायद ही कोई ऐसा घमंडी आदमी होगा जो इतनी सुन्दर जंजीर की भेंट को अस्वीकार कर देगा। मैं देखता हूँ कि यहाँ आदमी को धोखेधड़ी से रहने की क्या आवश्यकता है, जबकि गलियों में उसे ऐसे सुनहरे उपहार मिलते हों। मैं बाजार की तरफ़ चलता हूँ और वहीं ड्रोमियो का इन्तजार करूँगा। अगर कोई जहाज यहाँ से चला तो बस सीधे यहाँ से चले चलेंगे।

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[एक व्यापारी, सुनार और एक अधिकारी का प्रवेश]

व्यापारी : आप जाते हैं, 'पैन्टीकोस्ट'[1] से आपके ऊपर यह ऋण चला आ रहा है और इस बीच मैंने आपसे अधिक तक़ाज़ा भी नहीं किया और न अब करता, लेकिन अब मेरी फ़ारस जाने की पूरी तैयारी हो चुकी है और अपनी यात्रा के लिये मुझे सोना मढ़ने वाले कारीगरों की ज़रूरत है, इसलिये अब इसी वक्त मेरी रकम चुका दीजिये, नहीं तो मैं आपको इस अधिकारी के हवाले कर दूंगा।

सुनार : जितना ऋण आपका मेरे ऊपर है, उतना ही मेरा एन्टीफोलस पर है और जिस समय मैं आपसे मिला था, ठीक उसी समय उनको मैंने एक जंज़ीर दी थी। पाँच बजे मुझे उसकी रक़म मिलेगी। अगर आपको कष्ट न हो तो मेरे साथ उनके घर तक चलिये। मैं आपकी पूरी रकम अदा करके ऊपर से आपको धन्यवाद दूंगा।

[वारवनिता के यहां से इफीसस के एन्टीफोलस और इफीसस के ड्रोमियो का प्रवेश]

अधिकारी : आपकी तकलीफ़ बच गई, लीजिये वे तो सामने ही आ रहे हैं।

---

१. ईसाइयों का उस दिन के उपलक्ष्य में मेला, जब ईसा मसीह की आत्मा Holy ghost उनकी मृत्यु के पश्चात् इस पृथ्वी पर पुनः उतर कर आई थी।

इफी० का एन्टीफोलस : मैं तो इधर सुनार के घर जाता हूँ और तुम एक रस्सी का टुकड़ा खरीद लाओ, जिससे मैं अपनी पत्नी और उसके सहयोगियों को दण्ड दे सकूँ, जिन्होंने मुझे आज घर के बाहर रखा है। लेकिन अरे, मुझे सुनार दिखाई पड़ रहा है। जाओ, तुम तो जाकर एक रस्सी खरीद लाओ और उसे मेरे पास घर ले आना।

इफी० का ड्रोमियो : मुझे तो अपने स्वामी के लिये रस्सी खरीदने में उतनी ही खुशी है, जितनी हर साल एक हज़ार पाउण्ड बनाने में है।

[ड्रोमियो का प्रस्थान]

इफी० का एन्टीफोलस : जो आप पर विश्वास करता है, उसकी आप अच्छी मदद करते हैं। मुझसे आपने आने का वायदा किया था और साथ में जंज़ीर लाने के लिये भी कहा था, लेकिन न तो जंज़ीर ही आई और न जंज़ीर बनाने वाले आये। शायद आपने सोचा हो कि यदि इस जंजीर से हमारा प्रेम आपस में बँध गया तो फिर बहुत दिनों तक चलेगा, इसी कारण आप नहीं आये।

सुनार : यह मज़ाक रहने दीजिये। यह उसका पर्चा है, जिस पर उसका ठीक वज़न लिखा हुआ है। सोने की अच्छाई के बारे में भी है और उसके साथ उसके बनाने में कितना खर्चा लगा, वह भी लिखा है; यह सब मिलकर इन साहब का जितना ऋण मुझ पर है, उससे करीब तीन ड्यूकेट अधिक बैठता है, इसलिये मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि आप पहले इनका भुगतान कर दें क्योंकि ये समुद्री यात्रा की पूरी तैयारी कर चुके हैं और अब केवल इसीकी प्रतीक्षा में रुके हुए हैं।

इफी० का एन्टीफोलस : मेरे पास इस समय इतनी रकम नहीं है, फिर

इसके अलावा शहर में मुझे कुछ काम है ।

श्रीमान् ! अपरिचित सज्जन को घर ले जाइये और अपने साथ जंज़ीर भी लेते जाइये । मेरी पत्नी को उसे देकर उनसे रकम माँग लीजिये । शायद आपके पहुँचने तक मैं भी आ पहुँचूं ।

सुनार : तो फिर जंजीर को तो आप स्वयं ही उनके पास अपने साथ ले जायेंगे ?

इफी० का एन्टीफोलस : नहीं, आप ही अपने साथ ले जाइये; हो सकता है, मैं काफी समय तक न आ पाऊँ ।

सुनार : ठीक है श्रीमान् ! मैं ले जाऊँगा । क्या वह जंजीर आपके पास है ?

इफी० का एन्टीफोलस : अगर मेरे पास नहीं है श्रीमान्, तो मुझे उम्मीद है, आपके पास तो अवश्य है । यदि नहीं है तो फिर आप बिना रक़म के वापस लौट जाइये ।

सुनार : नहीं, नहीं, दे दीजिये वह जंजीर । इन साहब ने अपनी यात्रा का प्रबन्ध कर लिया है, मौसम अनुकूल है । क्या मैंने अपनी बदनामी के लिये इनको यहाँ इतनी देर तक रोका है ?

इफी० का एन्टीफोलस : श्रीमान् ! पौर्पेन्टाइन पर मिलने का जो वचन आपने तोड़ा था, उसीके बहाने के लिये आप इस क्षुद्र बात का प्रयोग कर रहे हैं । मैं तो आपको जंजीर नहीं लाने के ऊपर डाँटता, लेकिन आपने तो पहले ही एक झगड़ालू आदमी की तरह बकना शुरू कर दिया ।

व्यापारी : समय निकला जा रहा है, कृपा करके जल्दी मेरा भुगतान करिये ।

सुनार : सुन रहे हैं आप मुझ पर कैसा तकाजा हो रहा है ? वह जंजीर ?

इफी० का एन्टीफोलस : ठीक है, उसे मेरी पत्नी को देकर उनसे

अपनी रकम ले लीजिये।

सुनार : हाँ, हाँ, आप सब जानते हैं कि मैंने अभी आपको वह जंजीर दी थी। या तो उस जंजीर को मेरे साथ भेज दीजिये और नहीं तो कोई ऐसा निशान मुझे दे दीजिये जिसे दिखाकर मैं वह रकम ले सकूँ।

इफी० का एन्टीफोलस : बुरी बात है, आप इतनी दूर तक इस मजाक को बढ़ाते ले गये। बताइये, वह जंजीर कहाँ है, कृपा करके उसे मुझे दिखाइये।

व्यापारी : मुझे काम है, इसलिये मैं इतनी देर तक नहीं ठहर सकता। आप बताइये श्रीमान्! आप मुझे कुछ उत्तर देते हैं या नहीं। यदि नहीं तो मैं इन साहब को इन अधिकारी के हवाले कर देता हूँ।

इफी० का एन्टीफोलस : मैं आपको उत्तर दूँ? क्या उत्तर दूँ मैं आपको?

सुनार : वह रकम दीजिये, जिसे आपको उस जंजीर के बदले देनी है।

इफी० का एन्टीफोलस : जब तक मेरे पास वह जंजीर आ नहीं जाती, तब तक आपको मुझे कोई रक़म नहीं देनी है।

सुनार : आप जानते हैं, अभी आध घंटे पहले ही तो मैंने आपको वह जंजीर दी थी।

इफी० का एन्टीफोलस : आपने मुझे कुछ भी नहीं दिया था। ऐसा कहकर आप मेरे साथ ज्यादती करते हैं।

सुनार : ज्यादती तो आपकी है अधिक, कि आप यह मानते ही नहीं कि मैंने आपको वह जंजीर दी थी। ज़रा सोचिये तो किस तरह मेरा कर्जे का दारोमदार इसपर है।

व्यापारी : ठीक है, अधिकारी महोदय! आप मेरे मुकदमे के सिलसिले में इनको गिरफ्तार कर लीजिये।

अधिकारी : ठीक है, मैं आपको गिरफ्तार करता हूँ और ड्यूक के

नाम पर आपको आज्ञा देता हूँ, कि अब मेरी आज्ञा पर काम करिये।

सुनार : इससे तो मेरे सम्मान को धक्का पहुँचेगा। या तो आप मेरे लिये यह रकम देना स्वीकार कर लीजिये नहीं तो मैं आपको इन्हीं अधिकारी के हवाले कर दूंगा।

इफी० का एन्टीफोलस : उस चीज़ के बदले रकम देना स्वीकार कर लूं जो मुझे कभी मिली ही नहीं ? मूर्ख व्यक्ति ! यदि तुममें साहस है, तो मुझे गिरफ्तार करवा लो।

सुनार : यह आपकी फीस है। अधिकारी महोदय ! आप इन्हें गिरफ्तार कर लीजिये। अगर मेरा भाई भी इस खुले रूप से मेरी हँसी उड़ाता तो इस मामले में तो मैं उसको भी नहीं छोड़ता।

अधिकारी : मैं आपको भी गिरफ्तार करता हूँ श्रीमान् ! आपने मुकदमा तो सुन ही लिया है।

इफी० का एन्टीफोलस : ठीक है, अपनी जमानत देने तक मैं आपकी आज्ञा में हूँ लेकिन स्वर्णकार महोदय ! यह खेल आपको बहुत मँहगा पड़ेगा। दुकान में जो कुछ भी है, सब कुछ बिकवा दूंगा।

सुनार : श्रीमान् ! इफीसस में मुझे न्याय मिलेगा। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है, आपको इस सब पर शर्म आनी चाहिये।

[**सायरेक्यूसा का ड्रोमियो खाड़ी से आता है।**]

सा० का ड्रोमियो : स्वामी ! ईपीडैमियम का एक जहाज तैयार खड़ा है, बस उसके मालिक के आने की देर है; तब वह चल देगा। अपना सारा सामान तो श्रीमान् ! मैंने जहाज पर पहुँचा दिया है। तेल, 'बाम' और शराब वगैरह भी मैंने खरीद ली है। बस, जहाज बिलकुल तैयार है, सौभाग्य से हवा किनारे की ओर से चल रही है। उन्हें और किसी का इन्तजार नहीं है, बस केवल

अपने मालिक, जहाज के चालक और आपके लिये ही वे ठहरे हुए हैं।

इफी० का एन्टीफोलस : क्या हुआ तुम्हें अभी ? क्या पागल हो गये हो ? बेवकूफ़ भेड़ जैसे आदमी ! ईपीडैमियम का कौन-सा जहाज मेरे लिये रुका हुआ है ?

सा० का ड्रोमियो : एक जहाज, जिसमें यात्रा के लिये जगह तय करने के लिये आपने मुझे भेजा था।

इफी० का एन्टीफोलस : नशेबाज गुलाम ! मैंने तो तुझे एक रस्सी लेने भेजा था और साथ में उसका कारण भी बता दिया था।

सा० का ड्रोमियो : तो, आपने उसी समय रस्सी के लिये भी भेज दिया। श्रीमान् ! आपने जहाज की तलाश करने के लिये मुझे खाड़ी की तरफ भेजा था।

इफी० का एन्टीफोलस : अधिक फुर्सत के वक्त मैं इस बात पर बहस करूँगा और तब तुम्हारे इन कानों को अपनी बात अधिक ध्यान से सुनना भी सिखा दूँगा।

बदमाश ! सीधे एड्रियाना के पास चले जाओ यहाँ से, और उन्हें यह चाबी देकर कहना कि जो डेस्क तुर्की ज़रीदार कपड़े से ढकी हुई है, उसी में 'ड्यूकैट्स' से भरा हुआ एक बटुआ है, उसे वे भेज दें। उनसे यह भी कह देना कि मुझे यहाँ गिरफ्तार कर लिया गया है, उससे मैं अपनी जमानत दूँगा। बस, जल्दी चला जा गुलाम।

अधिकारी महोदय ! जब तक यह जमानत आये, तब तक आप जेल चलिये।

[प्रस्थान]

सा० का ड्रोमियो : ऐड्रियाना के पास, वहीं जहाँ हमने खाना खाया

था, जहाँ उस खूबसूरत औरत ने मुझे अपना पति बताया था। वह तो इतनी लम्बी-चौड़ी है, कि मुझे उम्मीद नहीं कि मेरे दोनों हाथ अपने पूरे घेरे में उसकी कमर को बाँध सकें। ठीक है, चाहे मेरी इच्छा के विरुद्ध हो, लेकिन मैं वहाँ जाऊँगा, क्योंकि सेवकों को तो अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना चाहिये।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[एड्रियाना और ल्यूसियाना का प्रवेश]

एड्रियाना : आह ल्यूसियाना ! क्या उन्होंने तुम्हें इस तरह फुसलाने की कोशिश की ? क्या तुमने ध्यान से उनकी आँखों की ओर देखा कि वे गम्भीरतापूर्वक यह सब कुछ कर रहे थे। बताओ देखा था या नहीं ? वे कैसे दिखाई देते थे, गुस्से से लाल या कुछ खिन्न-से पीले, बताओ वे दुःखी दिखाई देते थे या प्रसन्न ? बताओ तुमने क्या देखा इस मामले में ? उनके चेहरे पर विनाश-पूर्ण भावावेश का क्या चिह्न तुमने देखा ?

ल्यूसियाना : सबसे पहले तो उन्होंने यह कहा कि तुम्हारा उनके ऊपर किसी प्रकार का अधिकार नहीं है।

एड्रियाना : तो उनका मतलब है कि उन्होंने मेरे साथ कभी सम्बन्ध नहीं रखा। ओह ! यह तो और भी मेरे जी की जलन है।

ल्यूसियाना : फिर वे शपथ खाकर कहने लगे कि वे तो यहाँ एक परदेशी हैं।

एड्रियाना : तो स्वयं अपनी एक शपथ भंग करते हुए उन्होंने यह शपथ खाई ?

ल्यूसियाना : तब मैंने तुम्हारे लिये कहा।

एड्रियाना : फिर क्या कहा उन्होंने ?

ल्यूसियाना : जिस प्रेम की मैंने तुम्हारे लिये याचना की थी उसकी वे मुझसे याचना करने लगे।

एड्रियाना : किस तरह उन्होंने तुम्हारा प्रेम प्राप्त करने के लिये तुम्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न किया ?

ल्यूसियाना : कुछ शब्दों से जो सच्चे प्रेम-सम्बन्धों में अवश्य हृदय पर अपना प्रभाव डालते। सबसे पहले तो उन्होंने मेरे सौन्दर्य की प्रशंसा करना शुरू किया और फिर मेरी बोलचाल की प्रशंसा की।

एड्रियाना : क्या तुमने उनसे मधुरतापूर्ण स्वर में बातें की थीं ?

ल्यूसियाना : मेरी प्रार्थना मानकर थोड़ा धैर्य तो रखो।

एड्रियाना : नहीं, मैं अब चुपचाप नहीं बैठ सकती। यद्यपि मेरा हृदय तो यह नहीं कर सकता, लेकिन मेरी जबान अवश्य उनकी इच्छा को पूरी करेगी। वह झुका-मुड़ा आदमी, बुड्ढा, सूखा-सा जिसका बुरा-सा चेहरा है, और उससे भी बुरा शरीर है, हरएक जगह ऊबड़-खाबड़, फिर दुश्चरित्र, ढीठ, मूर्ख, असभ्य, कठोर सभी कुछ वह है। बुरा बिगड़ा हुआ शरीर और इससे भी अधिक नीच विचारों का आदमी है।

ल्यूसियाना : तो फिर ऐसे मनुष्य के लिये भला कौन ईर्ष्या करेगा ? जब कोई बुरी चीज चली जाती है, तो उसके लिये पश्चात्ताप कोई नहीं करता।

एड्रियाना : आह, लेकिन जो कुछ मैं कह रही हूँ, उससे कहीं अच्छा मैं उन्हें हृदय में समझती हूँ और फिर भी यही चाहती हूँ कि काश, दूसरों की आँखें और भी बुरी हों। 'पीविट' चिड़िया अपने घोंसले को बचाने के लिये उससे दूर चिल्लाती है। यद्यपि मेरी

जबान से उनके लिये बुरी बातें निकल रही हैं लेकिन मेरा हृदय उनके लिये भगवान से प्रार्थना कर रहा है।

[सायरेक्यूसा के ड्रोमियो का प्रवेश]

सा० का ड्रोमियो : जल्दी जाइये, डेस्क, वह बटुआ, श्रीमती जी, जल्दी करिये।

ल्यूसियाना : तेरी साँस कैसे टूट रही है ?

सा० का ड्रोमियो : बहुत तेज भागने से।

एड्रियाना : ड्रोमियो ! तेरे स्वामी कहाँ हैं ? क्या वे ठीक तरह हैं ?

सा० का ड्रोमियो : जी नहीं; वे तो नरक के उस ऊपरी भाग में हैं जहाँ अधार्मिक लोग रहते हैं, रौरव नरक से भी बुरे स्थान पर। उस शैतान[1] ने, जिसकी जकड़ कहीं जाकर खत्म नहीं होती है, उन्हें पकड़ रखा है। उसका सख्त दिल चमड़े के कोट के नीचे फौलादी बटनों के नीचे बन्द रहता है। वह बिलकुल दैत्य और पिशाच है, निर्दयी और कठोर है। एक भेड़िया है, नहीं इससे भी बुरा चारों ओर चमड़े में लिपटा हुआ आदमी है। पीछे से आने वाला झूठा दोस्त है, कंधा छूकर गिरफ्तार करने वाला है, वह है जो छोटे-छोटे रास्तों, मोड़ों और गलियों में आना-जाना बन्द कर देता है। वह वह कुत्ता है, जो उल्टी दिशा में भागता है लेकिन फिर भी पैर की खुशबू सूंघकर शिकार कर लेता है। वह वह आदमी है जो न्याय के सामने निस्सहाय आत्माओं को खड़ा करके उन्हें सीधे नरक भेज देता है।

एड्रियाना : लेकिन ड्रोमियो, बात क्या है ?

सा० का ड्रोमियो : मुझे कुछ पता नहीं। उनको किसी मामले में गिरफ्तार कर लिया गया है।

---

१. ड्रोमियो पुलिस ऑफिसर को शैतान के रूप में चित्रित करता है।

एड्रियाना : क्या, उनको गिरफ्तार कर लिया गया है ? बताओ मुझे, किसका मुकदमा है वह ?

सा० का ड्रोमियो : यह मैं नहीं जानता कि किसके मुकदमे के सिलसिले में उनको गिरफ़्तार किया गया है, लेकिन इतना मैं अवश्य कह सकता हूँ कि जिसने उनको गिरफ़्तार किया है, उसने चमड़े की पोशाक पहन रखी है। श्रीमती, क्या आप डेस्क में रखी हुई वह रकम देकर उनको मुक्त करायेंगी ?

एड्रियाना : बहिन, ले आओ उसे। मुझे तो इस पर आश्चर्य हो रहा है।

[ल्यूसियाना का प्रस्थान]

अवश्य वे किसी के ऋणी हैं जिसका मुझे पता नहीं है। बताओ, क्या वे किसी के ऋण न चुकाने के ऊपर गिरफ्तार हुए हैं ?

सा० का ड्रोमियो : ऋण के सम्बन्ध में नहीं, बल्कि उससे कहीं बड़ी चीज़ पर। एक जंजीर पर; जंजीर, क्या आपको उसके बजने की आवाज़ नहीं सुनाई दे रही है ?

एड्रियाना : क्या, जंजीर की ?

सा० का ड्रोमियो : नहीं, नहीं, घंटे की। अब मेरे जाने का वक्त हो गया है। मेरे वहाँ से चलने के पहले दो बज चुके थे। अब घड़ी एक बजा रही है।

एड्रियाना : घंटे पीछे की ओर चलते हैं, यह तो मैंने कभी नहीं सुना था।

सा० का ड्रोमियो : जी हाँ, अगर कोई घंटा सार्जेन्ट के सामने आ जाये तो डर के मारे पीछे चलने लग जाता है।

एड्रियाना : जैसे कि मानो समय कोई ऋणी है। कैसी अजीब बातें बकता है तू।

सा० का ड्रोमियो : समय तो बड़ा भारी दिवालिया है और जितना वह

वस्तुओं को सुस्थिर अवस्था में रख सकता है, उससे कहीं अधिक ऋणी है ! वह एक चोर भी है। क्या आपने लोगों को यह कहते नहीं सुना कि रात और दिन वह समय चोरी से आगे बढ़ता जाता है ! अगर समय एक ऋणी और चोर दोनों हो तो फिर आप ही सोचिये कि अगर कोई सार्जेन्ट रास्ते में मिल जाय तो क्या एक दिन में एक घंटा पीछे भी वह नहीं भागेगा।

[ल्यूसियाना का प्रवेश]

एड्रियाना : जाओ ड्रोमियो ! यह रकम है, सीधे इसे ले जाओ और अपने स्वामी को तुरन्त घर वापस ले आओ। आओ बहिन ! मेरा तो इस कल्पना से दिल बैठा जाता है। यह कल्पना ही तो मेरा दुःख है और यही मेरे हृदय की पीड़ा है।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[सायरेक्यूसा के एन्टीफोलस का प्रवेश]

सा० का एन्टीफोलस : जिस आदमी से भी मिलता हूँ, वही मुझे अभिवादन करता है ; जैसे मानो मैं उनका चिर परिचित मित्र हूँ और हरएक मेरा नाम लेकर मुझे पुकारता है। कोई मुझे धन देता है तो कोई निमन्त्रित करता है और कोई दूसरा आकर मेरी मेहरबानी के बदले मुझे धन्यवाद देता है। कोई खरीदने के लिये विभिन्न वस्तुएँ मेरे पास लाता है। अभी-अभी एक दर्जी ने मुझे अपनी दूकान में बुलाया था, और उसने वे रेशमी कपड़े मुझे दिखाये थे जो उसने मेरे लिये खरीदे थे और फिर उसने मेरे शरीर का नाप लिया। निश्चित ही ये बनावटी चालें हैं और यहाँ अन्धकारमय उत्तरी ध्रुव के जादूगर रहते हैं।

[सायरक्यूसा के ड्रोमियो का प्रवेश]

सा० का ड्रोमियो : स्वामी ! जिस सोने के लिये आपने मुझे भेजा था वह यह है। क्या आप भी वृद्ध आदम की तरह नये वस्त्र पहनकर अपने स्वर्ग से बहिष्कृत होकर आ गये हैं ?

सा० का एन्टीफोलस : कैसा सोना है यह ? किस आदम से तुम्हारा मतलब है ?

सा० का ड्रोमियो : उस आदम के बारे में नहीं कह रहा हूँ जो स्वर्ग की देख-भाल करता था बल्कि वह आदम[1] जो उस जेल की देख-भाल करता है; वह जो उस बछड़े की खाल का कोट पहनता है, जो उस अतिव्ययी के लिये मारा गया था। वही श्रीमान् ! जो एक दुष्टात्मा की तरह आपके पीछे आया था और जिसने आपकी सारी आज़ादी छीन ली थी।

सा० का एन्टीफोलस : मेरी समझ में तेरी बात नहीं आती।

सा० का ड्रोमियो : नहीं ? यह तो साफ बात है। वही जो चमड़े के केस में बेस-वॉइल (एक वाद्य-यन्त्र) की तरह लिपटा हुआ गया था। वही आदमी श्रीमान्, जो जब शरीफ़ आदमी थक जाते हैं, तो उनको धक्का देता है और उन्हें गिरफ़्तार कर लेता है। वही श्रीमान् ! जो मिटे हुए आदमियों पर रहम दिखाता है और उनको जेल भेज देता है। वही जो 'मूरिश' भाले की अपेक्षा अपने डंडे से ही बड़े-बड़े जुल्म करने के लिये दाँव लगाता है।

सा० का एन्टीफोलस : क्या तुम्हारा मतलब एक अधिकारी से है ?

सा० का ड्रोमियो : जी हाँ, वही ऋणों के भुगतान के लिये नियुक्त अधिकारी। वह जो ऋण न चुकाने वाले आदमी की पूरी खबर

---

१. यह संवाद बाइबिल की कहानी के आधार पर दिया गया है और सार्जेन्ट के कोट का मजाक चालू रखा गया है।

लेता है। वह जो किसी आदमी के हमेशा बिस्तर पर जाने की बात सोचता है और कहता है; भगवान तुम्हें ठीक आराम[1] दे !

सा० का एन्टीफोलस : ठीक है श्रीमान् ! अब अपनी यह मूर्खता बन्द करिये। यह बताइये, कि क्या आज रात को ही यहाँ से कोई जहाज रवाना हो रहा है ? क्या हम जा सकते हैं ?

सा० का ड्रोमियो : श्रीमान् ! घंटे पहले ही मैंने आपको सूचना दे दी थी कि 'एक्सपेडीशन' नामक जहाज आज रात को ही यहाँ से रवाना होने वाला है, फिर सार्जेन्ट ने आपको बीच में ही रोक लिया, जिससे आपको उस छोटे-से किनारे पर चलने वाले जहाज़ 'डिले' के लिये ठहरना पड़ा। ये वे स्वर्णमुद्राएँ हैं, जिन्हें आपने अपनी मुक्ति के लिये मँगवाया था।

सा० का एन्टीफोलस : यह आदमी तो पागल हो गया है और वही मेरी हालत है। यहाँ हम कल्पनाओं के बीच भटक रहे हैं। कोई दैवी शक्ति हमको यहाँ से मुक्ति करे !

[**वारवनिता का प्रवेश**]

वारवनिता : खूब मिले एन्टीफोलस ! खूब मिले। अब तो श्रीमान् ! आपको वह सुनार मिल गया है। क्या यही वह जंजीर है, जिसके आज देने का आपने वायदा किया था ?

सा० का एन्टीफोलस : शैतान, बस मुझे छोड़ दे ! मैं कहता हूँ, तू मुझे इस तरह फुलसाने की कोशिश न कर।

ड्रोमियो : स्वामी ! क्या ये श्रीमती शैतान हैं ?

सा० का एन्टीफोलस : यही शैतान है।

---

१. Rest : यहाँ ड्रोमियो लगातार Arrest शब्द पर 'पन' (द्व्यर्थक शब्द) का प्रयोग करता आ रहा है, इस प्रकार के 'पन' पहले भी कई स्थानों पर आये हैं, लेकिन हमने भावार्थ की ओर ही अपना विशेष ध्यान रखा है।

सा० का ड्रोमियो : जी नहीं, इससे भी बुरी, ये तो शैतान की अम्मा हैं। यहाँ तो ये जैसे आवारा लड़कियों को आज़ाद फिरने की आदत होती है, वैसे ही आई हैं और उससे होता क्या है, कि ये आवारा लड़कियाँ भगवान से प्रार्थना करती हैं कि मेरे ऊपर क़यामत टूटे; मतलब कहने का भगवान मुझे भी एक आवारा लड़की बना दे। यह लिखा हुआ है कि वे पुरुषों को प्रकाश[1] की देवी जैसी मालूम देती हैं। प्रकाश अग्नि[1] का ही एक प्रभाव है और अग्नि जलाती है अर्थात् आवारा लड़कियाँ भी जलेंगी। उनके पास मत आना।

वारवनिता : आपका यह आदमी और आप तो बड़ी खुश तबियत के आदमी हैं। क्या आप मेरे साथ चलेंगे, हम यहीं अपने खाने की तैयारी करेंगे।

सा० का ड्रोमियो : स्वामी! अगर आपको खाने की ही उम्मीद है तो उसके लिये आप एक लम्बा चम्मच मँगवा लें।

सा० का एन्टीफोलस : यह क्यों ड्रोमियो?

सा० का ड्रोमियो : इसलिये श्रीमान्! जो उस शैतान के साथ खाना खाये, उसके पास बड़ा चम्मच होना चाहिये।

सा० का एन्टीफोलस : मुझे छोड़ दो पिशाचिनी! क्या तुम खाना खाने के लिये मुझसे कह रही थीं? जैसे तुम सभी यहाँ जादूगरनी हो, इसी प्रकार मैं भी हूँ। मैं जादू के बल पर कहता हूँ कि मुझे छोड़कर चले जाओ।

वारवनिता : तो मेरी वह अँगूठी दे दीजिये, जिसे आपने खाने के वक्त लिया था या मेरे हीरे के लिये वह जंज़ीर दे दीजिये, जिसका

---

१. Light इस शब्द के दो अर्थ हैं। क्षुद्र चरित्र वाला यानी आवारा और दूसरा अर्थ है प्रकाश। सा० के ड्रोमियो ने इस शब्द पर 'पन' (यद्‌र्थक शब्द) का प्रयोग करके दृश्य का वातावरण उपस्थित किया है।

वायदा आपने किया था। बस, फिर मैं आपको किसी तरह की तकलीफ़ नहीं दूंगी और यहाँ से चली जाऊँगी।

सा० का ड्रोमियो : कुछ चुड़ैलें तो आदमी से नाखूनों का जोड़ा, बाल, खून की एक बूंद, पिन, सुपारी, चैरी स्टोन नाम का सख्त लाल फल, पत्ती आदि कोई न कोई चीज़ माँगती हैं, लेकिन जो उनसे भी अधिक लालची होती हैं वे जंजीर माँगती हैं

स्वामी ! अक्लमंदी से काम लेना ! अगर आपने उसे दे दी तो यही चुड़ैल अपनी जंजीर को फिरायेगी और उससे हम सबके हृदय में डर पैदा कर देगी।

वारवनिता : मेरी अंगूठी दे दीजिये श्रीमान् ! मैं प्रार्थना करती हूँ। नहीं तो वह जंज़ीर दे दीजिये। मुझे उम्मीद है, आप मुझे ठगना तो नहीं चाहते ?

सा० का एन्टीफोलस : चली जा डायन, यहाँ से। ड्रोमियो, चलो, यहाँ से चलें।

सा० का ड्रोमियो : श्रीमती, आप तो यह जानती हैं, सबसे अधिक दम्भी मयूर ही यह कह रहा है कि दम्भ छोड़ दो।

[**एन्टीफोलस और ड्रोमियो का प्रस्थान**]

वारवनिता : अब तो निस्संदेह ही एन्टीफोलस पागल हो गया है, नहीं तो वह कभी भी इस तरह अपने आपको नीचे नहीं गिराता। उसने चालीस ड्यूकेट की मेरी अंगूठी लेकर उसके बदले एक जंज़ीर देने का वायदा किया था। अब तो दोनों के बारे में वह मना करता है। मुझे जो कारण लगता है, वह तो उसका पागल होना ही हो सकता है। अभी-अभी के आवेशपूर्ण व्यवहार के अलावा भी आज खाने के वक्त उसने एक बड़े ही पागलपन की कहानी कही कि उसके घर के दरवाज़े उसी के लिये नहीं खोले गये। लगता है, उसकी पत्नी

उसके दौरों के बारे में जानती है, तभी तो उसने उसके लिये दरवाज़े बन्द कर दिये। अब मेरा काम तो शीघ्र उसके घर जाकर उसकी पत्नी से यह कहना है कि उसका पति अपने पागलपन की हालत में मेरे घर घुस आया था और ज़बरदस्ती मेरी अंगूठी ले गया। यही रास्ता सबसे अच्छा है, जिसे मैंने तय किया है, क्योंकि चालीस ड्यूकैट की रकम बहुत बड़ी होती है, उसे कैसे खोया जा सकता है ?

दृश्य ४

[इफीसस के एन्टीफोलस का एक जेलर के साथ प्रवेश]

इफी० का एन्टीफोलस : डरिये नहीं श्रीमान् ! मैं भागूंगा नहीं। जाने से पहले मैं आपको जमानत के रूप में उतनी रकम दे जाऊँगा जिसके लिये मुझको गिरफ़्तार किया गया है। आज मेरी पत्नी की तबियत कुछ अजीब हो रही है और इसीलिये वह संदेशवाहक की बात का आसानी से विश्वास नहीं करेगी कि इफीसस में मुझे गिरफ़्तार कर लिया गया है। मैं आपसे कहता हूँ, यह बात उसके कानों को बड़ी कठोर मालूम देगी।

[इफीसस के ड्रोमियो का एक रस्सी लिए हुए प्रवेश]

वह आया मेरा आदमी। मेरे विचार से वह रकम लाया है। कहिये श्रीमान् ! क्या आप वह चीज़ ले आये हैं, जिसके लिये मैंने आपको भेजा था ?

इफी० का ड्रोमियो : मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, यह वह चीज़ है, जिससे सबका भुगतान हो जायेगा।

इफी० का एन्टीफोलस : लेकिन वह रकम कहाँ है ?

इफी० का ड्रोमियो : श्रीमान्, यह रस्सी उस रकम को देकर ही तो खरीदी है।

इफी० का एन्टीफोलस : तो क्या पाँच सौ ड्यूकेट देकर यह रस्सी खरीदी है तूने, बदमाश ?

इफी० का ड्रोमियो : श्रीमान्, इस दर पर मैं आपको पाँच सौ दे सकता हूँ।

इफी० का एन्टीफोलस : लेकिन यह बता कि किस काम से मैंने तुम्हें शीघ्र घर भेजा था ?

इफी० का ड्रोमियो : रस्सी के टुकड़े[1] के लिये श्रीमान्, और इस काम को करके मैं वापस आ गया हूँ।

इफी० का एन्टीफोलस : तो श्रीमान्, बस उसी टुकड़े से आपका स्वागत होगा।

अधिकारी : श्रीमान्, थोड़ा धैर्य रखिये।

इफी० का ड्रोमियो : मैं बड़ी आपत्ति में फँसा हुआ हूँ, धैर्य तो मुझे रखना चाहिये।

अधिकारी : अच्छा, भले आदमी ! अब अपनी ज़बान बन्द रखो।

इफी० का ड्रोमियो : हाँ, हाँ, तो कृपा करके उनसे भी तो अपने हाथ रोकने के लिये कहिये।

इफी० का एन्टीफोलस : पापिन की औलाद, बदमाश मूर्ख कहीं का !

इफी० का ड्रोमियो : श्रीमान्, काश मैं चेतनाविहीन[2] होता, जिससे मैं

---

१. End : इस शब्द के दो अर्थ हैं; कारण या तात्पर्य, और दूसरा अर्थ है सिरा या टुकड़ा। इफी० का ड्रोमियो इस शब्द को लेकर 'पन' (द्व्यर्थक शब्द) का प्रयोग करता है। हिन्दी में इस कौशल को दिखाना कठिन है, इसीलिये हमने पाठक का भाषा के इस चातुर्य से परिचित करा कर भावार्थ देना ही श्रेष्ठ समझा है।

२. Senseless : इस शब्द के दो अर्थ हैं; मूर्ख और दूसरा चेतनाविहीन। ड्रोमियो यहाँ भी 'पन' (द्व्यर्थक शब्द) का प्रयोग करता है।

आपके थप्पड़ों को महसूस ही नहीं कर पाता।

इफी० का एन्टीफोलस : तू तो सिर्फ थप्पड़ों के सिवाय और किसी बात में भी समझदार नहीं है, और इसलिये तू वाक़ई एक गधा है।

इफी० का ड्रोमियो : ठीक है, मैं एक गधा ही हूँ। आप मेरे लम्बे कान देखकर इसको सिद्ध कर सकते हैं। मैंने अपने बचपन से अब तक उनकी सेवा की है और अब उनके हाथों थप्पड़ खाने के और कुछ तो मिलता नहीं। जब मैं ठंडा पड़ता हूँ, तभी ये मार-मार कर मुझे गरमा देते हैं; और जब मुझे गरमी लगती है, तब पीट-पीटकर ये मुझे ठंडा करते हैं। सोता हूँ, तब इसीसे तो जगाया जाता हूँ और बैठा होता हूँ तो, इसीसे उठाया जाता हूँ। जब घर से जाता हूँ, तो दरवाज़े के बाहर निकाल दिया जाता हूँ। जब वापस लौटता हूँ, तो इसीसे मेरा स्वागत होता है। सच कहता हूँ, मैं तो इसे इस तरह कंधे पर लादे हुए हूँ, जैसे एक भिखारिन अपने चिथड़े लादे फिरती है, और मैं सोचता हूँ कि जब उन्होंने मुझे लँगड़ा कर दिया है, तो मैं इसीसे दर-दर भीख माँगता फिरूँगा।

[एड्रियाना, ल्यूसियाना, वारवनिता और पिंच एक अध्यापक का प्रवेश]

इफी० का एन्टीफोलस : चलो, चलो, देखो मेरी पत्नी आ रही है उधर से।

इफी० का ड्रोमियो : अच्छा, अन्त को याद करने वाली देवी! अपने अन्त के विषय में सोचिये या फिर तोते[1] की तरह भविष्यवाणी

---

१. तोतों को जिस तरह भारतवर्ष में 'राम-राम कहो' रटाते हैं, उसी प्रकार वहाँ रटाया जाता था 'अन्त को याद करो'।

करूँ कि दण्ड के रूप में, ज़रा रस्सी से खबरदार रहिये।

इफी० का एन्टीफोलस : तो क्या, तू बातें बनाता ही जायेगा ?

[ड्रोमियो को पीटता है।]

वारवनिता : बोलो, क्या कहती हो अब ? क्या तुम्हारे पति पागल नहीं हैं ?

एड्रियाना : जिस असभ्यता का व्यवहार वे कर रहे हैं, उससे तो पूरा विश्वास होता है।

अच्छे डॉक्टर पिंच ! आप तो एक तान्त्रिक भी हैं। उनका यह पागलपन दूर कर दीजिये। आप जो कुछ भी माँगेंगे, मैं आपको दूंगी।

ल्यूसियाना : हाय, कितने आवेशपूर्ण, कितने उत्तेजित दिखाई देते हैं वे !

वारवानिता : देखिये, अति आवेश के कारण किस तरह काँप रहे हैं !

पिंच : ज़रा मुझे अपना हाथ दीजिये और नब्ज़ देखने दीजिये।

इफी० का एन्टीफोलस : यह मेरा हाथ है, और इसको आपके कान मसलने का मौका दीजिये।

पिंच : शैतान ! तूने इस आदमी के भीतर अधिकार जमा लिया ! मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि मेरे पवित्र मन्त्र सुनकर फौरन इसको छोड़ दे और सीधा अपने उसी अँधेरे घर में चला जा। मैं स्वर्ग के सभी सन्तों के नाम पर कहता हूँ, चला जा !

इफी० का एन्टीफोलस : मूर्ख जादूगर, ठहरो, बन्द करो यह सब कुछ ! मैं पागल नहीं हूँ।

एड्रियाना : ओह, दुःखी आत्मा ! काश, तुम्हारी यह अवस्था नहीं होती !

इफी० का एन्टीफोलस : तुम ढीठ औरत ! क्या ये सब तुम्हारे

ग्राहक हैं ? इस पीले चेहरे वाले तुम्हारे दोस्त ने क्या आज मेरे घर पर दावत और मज़े उड़ाये हैं, जबकि मेरे लिये वे दरवाज़े, जिनके भीतर पाप हो रहा था, बन्द कर दिये गये थे और मुझे अन्दर घुसने तक नहीं दिया गया था ?

एड्रियाना : मेरे प्रियतम ! परमात्मा जानता है, आपने घर पर ही तो खाना खाया था। काश आप इस सब बदनामी और शर्म से बचने के लिये अभी तक वहीं रह पाते !

इफी० का एन्टीफोलस : घर खाना खाया था ? बदमाश औरत ! क्या कहती है तू ?

इफी० का ड्रोमियो : श्रीमान्, मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि आपने घर पर खाना नहीं खाया था।

इफी० का एन्टीफोलस : तो क्या मेरे दरवाज़े मेरे लिये ही बन्द नहीं कर लिये गये थे ?

इफी० का ड्रोसियो : भगवान की सौगन्ध, दरवाजे बन्द थे और आपको अन्दर घुसने नहीं दिया गया था।

इफी० का एन्टीफोलस : और क्या इसने मुझे नहीं दुतकारा था ?

इफी० का ड्रोमियो : झूठ नहीं बोलता हूँ, सच बात है, आपको इन्होंने खुद दुतकारा था।

इफी० का एन्टीफोलस : क्या इसकी रसोईदारिन ने खुद आकर धृष्टतापूर्ण बातें नहीं की थीं ? क्या उसने ताने कसकर मेरी हँसी नहीं उड़ाई थी ?

इफी० का ड्रोमियो : ज़रूर, ऐसा ही किया था उसने। उस रसोईदारिन ने आपकी हँसी उड़ाई थी।

इफी० का एन्टीफोलस : और तब क्या मैं गुस्से में आकर वहाँ से चला नहीं गया था ?

इफी० का ड्रोमियो : सच है, आप चले गये थे । मेरी हड्डियाँ इसकी साक्षी हैं, क्योंकि तब से आपके गुस्से की कसक इनसे दूर नहीं हुई है ।

एड्रियाना : इस चित्त-भ्रम की अवस्था में अच्छा तो यही है कि ऐसी ही बातें करके हम इनका धैर्य बँधायें ।

पिंच : इसमें कोई शर्म की बात नहीं है । वह समझ गया है, तभी ऐसी बातें कर रहा है ।

इफी० का एन्टीफोलस : तूने मुझे गिरफ्तार करवाने के लिये उस सुनार को प्रेरित किया ?

एड्रियाना : हाय, मैंने तो ड्रोमियो के हाथों आपके छुड़ाने के लिये रकम भेजी थी । यह जल्दी में भागा हुआ मेरे पास आया ।

इफी० का ड्रोमियो : मेरे हाथों भेजी थी ? सौहार्द्र और सदभावना अवश्य भेजी होंगी, लेकिन स्वामी सच कहता हूँ, रकम एक पैसे तक की भी नहीं ।

इफी० का एन्टीफोलस : क्या तू इनके पास ड्यूकैट से भरे हुए बटुए को माँगने गया था ?

एड्रियाना : यह मेरे पास आया था और मैंने इसे वह बटुआ दे दिया था ।

ल्यूसियाना : और मैं इसके लिए गवाही हूँ ।

इफी० का ड्रोमियो : भगवान और रस्सी को बनाने वाला मेरे गवाह हैं कि मैं तो सिर्फ एक रस्सी के लिए भेजा गया था ।

पिंच : श्रीमती, स्वामी और सेवक दोनों पागल हैं । उनकी पीली और शून्य आँखों को देखकर मुझे इसका विश्वास होता है । अब तो उनको किसी अँधेरे कमरे में बाँधकर पटकवा देना चाहिये ।

इफी० का एन्टीफोलस : यह बता कि तूने आज क्यों मेरे लिये घर के दरवाज़े बन्द कर लिये थे और क्यों उस स्वर्णमुद्राओं भरे बटुए के लिए मनाकर दिया था ?

एड्रियाना : मेरे अच्छे प्रियतम ! मैंने आपके लिये दरवाज़े नहीं बन्द किये थे ।

इफी० का ड्रोमियो : और उदार स्वामी ! मुझे स्वर्णमुद्राएँ भी नहीं मिली थीं । बस, मैं तो यही बात स्वीकार कर सकता हूँ कि हमारे लिये घर के दरवाज़े बन्द कर लिये गये थे ।

एड्रियाना : नमकहराम और बदमाश ! दोनों बातों में तू झूठ बोलता है ।

इफी० का एन्टीफोलस : नमकहराम और नाकार औरत ! तू तो सभी बातों में झूठी है और मुझे घृणा और उपेक्षा का पात्र बनाकर तूने बदमाशों से अपने रिश्ते जोड़ रखे हैं, लेकिन खबरदार रहना, इन्हीं नाखूनों से मैं तेरी इन विश्वासघात भरी हुई आँखों को नोंच लूँगा, जो मुझमें इस घृणित व्यापार की कल्पना करके मेरी ओर देखेंगी ।

[तीन-चार आदमी आते हैं और उसे बाँधने का प्रयत्न करते हैं । वह छूटने का प्रयत्न करता है ।]

एड्रियाना : बाँध लो, बाँध लो इन्हें, मेरे पास मत आने दो !

पिंच : शैतान बड़ी ताक़त के साथ घुसा हुआ है इनके शरीर में, इसलिए ज़्यादा आदमियों को पास रहने की ज़रूरत है ।

ल्यूसियाना : ओह ! दुःखी प्राणी ! कैसा पीला और विक्षिप्त लगता है !

इफी० का एन्टीफोलस : क्या तुम मेरी हत्या करोगे ? जेलर, देखो मैं तुम्हारा कैदी हूँ; क्या तुम इन आदमियों से मुझे नहीं छुड़ाओगे ?

अधिकारी : श्रीमान् ! आप इन्हें छोड़ दीजिये, ये मेरे कैदी हैं और इसलिये आपका इनके ऊपर कोई हक़ नहीं है।

पिंच : यह आदमी भी पागल लगता है; पकड़ो, इसको भी बाँध दो।

एड्रियाना : कठोर हृदय वाले अधिकारी महोदय ! क्या करोगे आप अब ? क्या आपको यह देखना अच्छा लगता है, कि एक दुःखी आदमी इस तरह स्वयं को इस आवेश-विक्षोभ का पात्र बनाये ?

अधिकारी : ये मेरे कैदी हैं, अगर मैं इनको छोड़ देता हूँ तो जो ऋण इनके ऊपर चढ़ा हुआ है, वह मुझसे लिया जायगा।

एड्रियाना : मैं जाने से पहले इस ज़िम्मेदारी से आपको छुटकारा दिला देती हूँ। इनके ऋणदाता के पास मुझे ले चलिये और यह ऋण कैसे हुआ, यह जानकर मैं इसको चुका दूंगी। अच्छे डाक्टर, आप इन्हें पूरी हिफाज़त के साथ मेरे घर ले जाइये। ओह ! कितना बुरा दिन है ?

इफी० का एन्टीफोलस : ओह ! कैसी बुरी बदचलन औरत है !

इफी० का ड्रोमियो : स्वामी ! आपके इस पागलपन के पीछे मैं और बँध गया।

इफी० का एन्टीफोलस : चला जा बदमाश, यहाँ से ! किस तरह से तू मुझे पागल कहता है ?

इफी० का ड्रोमियो : तो फिर आपको बिना किसी कारण के बाँध लिया जायेगा। मेरे अच्छे स्वामी ! पागल हो जाइये और शैतान का नाम पुकारिये।

ल्यूसियाना : परमात्मा दुःखी आत्माओं की सहायता करे। कैसी व्यर्थ की बातों में लगे हुए हैं वे इस समय !

एड्रियाना : इनको ले जाओ यहाँ से और बहिन, तुम मेरे साथ आओ।

[अधिकारी, एड्रियाना तथा वारवनिता का स्थान]

अब बताइये, किसका ऋण न चुकाने पर इनको गिरफ़्तार कर लिया गया है ?

अधिकारी : एक ऐंजिलो नाम के स्वर्णकार हैं, क्या आप उनको जानती हैं ?

एड्रियाना : जानती हूँ, कितनी रकम है उनकी ?

अधिकारी : दो सौ ड्यूकेट ।

एड्रियाना : यह ऋण कैसे हुआ, यह तो बताइये ।

अधिकारी : उनसे आपके पति ने एक जंज़ीर ली थी, बस उसी का वह ऋण है ।

एड्रियाना : हाँ, हाँ, इन्होंने मेरे लिये एक जंज़ीर बनवाने के लिये कहा ज़रूर था, लेकिन मुझको तो वह अभी तक मिली नहीं ।

वारवनिता : जब आपके पति क्रोधावेश में भरकर मेरे घर आए तो मेरी अंगूठी उठा कर ले गए । वह अंगूठी मैंने अभी उनकी उँगली में देखी थी, जब जंज़ीर लिये हुए मुझे वे मिले थे, ठीक उसके बाद ।

एड्रियाना : हो सकता है, लेकिन मैंने तो उनके पास वह जंजीर नहीं देखी ।

चलिये जेलर ! उन स्वर्णकार के पास मुझे पहुँचा दीजिए । मैं विस्तार से सारे रहस्य की सचाई जानना चाहती हूँ ।

[**सायरेक्यूसा के एन्टीफोलस का अपनी तलवार लिये हुए सा० के ड्रोमियो के साथ प्रवेश**]

ल्यूसियाना : परमात्मा दया कर । वे तो फिर छूटकर आगये ।

एड्रियाना : और नंगी तलवार लेकर आये हैं । फिर इन्हें बाँधने के लिये हमें ज्यादा आदमी बुलाने चाहियें ।

[**सभी भाग जाते हैं ।**]

अधिकारी : भाग जाओ, वे हमें मार देंगे।

[**सभी डरकर जितनी तेज़ भाग सकते थे भागते हैं।**]

सा० का एन्टीफोलस : मुझे लगता है, ये डायनें तलवार से डरती हैं।

सा० का ड्रोमियो : वह स्त्री, जो आपकी पत्नी होने वाली थी, वह भी भाग गई।

सा० का एन्टीफोलस : चलो, सेन्टोर चलते हैं और वहाँ से अपना सारा सामान ले लेंगे। मैं चहता हूँ, किसी तरह हम वहाँ से सुरक्षित रूप से बचकर निकल जायें और एक बार जहाज़ पर सवार हो जायँ।

सा० का ड्रोमियो : नहीं-नहीं, निश्चित होकर आज रात तो यहीं ठहरिये।

ये हमारा कोई नुकसान नहीं कर सकते। आपने देखा, वे तो हमसे बड़ी अच्छी बातें करते हैं, हमें सोना देते हैं। मेरे विचार से यह अच्छे लोगों का देश है। बस, उस पहाड़ जैसी देह की औरत के लिये ही, जो मुझसे शादी करना चाहती है, मैं अभी भी यहाँ ठहरना नहीं चाहता हूँ।

सा० का एन्टीफोलस: मुझे तो यदि यह सारा शहर भी दे दिया जाय तो भी मैं आज रात नहीं ठहर सकता। चलो, जल्दी चलकर अपना सामान जहाज़ पर चढ़ा दें।

[**प्रस्थान**]

पाँचवाँ अंक

दृश्य १

[व्यापारी और सुनार का प्रवेश]

सुनार : मुझे खेद है श्रीमान् ! कि मैंने आपके कार्य में बाधा उपस्थित की, लेकिन मैं सच कहता हूँ, मैंने उनको जंज़ीर दी थी; यद्यपि अब तो वे बेईमानी से उसे झुठा रहे हैं।

व्यापारी : नगर में कैसा सम्मान है इस मनुष्य का ?

सुनार : उच्च ख्याति प्राप्त मनुष्य है श्रीमान् ! अपार स्नेह और सम्मान का पात्र है। नगर में प्रथम श्रेणी का मनुष्य है। उसके एक शब्द पर मैं किसी भी समय अपना सारा धन दे सकता था।

व्यापारी : धीरे बोलो, मेरे विचार से वह उधर से आ रहा है।

[सायरेक्यूसा के एन्टीफोलस और सायरेक्यूसा के ड्रोमियो का पुनः प्रवेश]

सुनार : ठीक ऐसा ही है, और जिस जंज़ीर के बारे में उसने बहुत बेईमानी से झूठ बोला था, वही उसने अपनी गरदन में पहन रखी है।

श्रीमान् ! थोड़ा मेरे निकट आइये, मैं उससे कहूँगा।—श्रीयुत एन्टीफोलस ! मुझे बड़ा आश्चर्य है कि जिस जंज़ीर को खुले रूप में आप पहने हुए हैं, उसी के बारे में झूठ बोलकर आप मुझे इस मुसीबत में डालकर जलील करेंगे और अपने आपको भी बात झुठाने के ऊपर बदनाम करेंगे। फिर इस सारी ज़लालत, जुर्म और सज़ा के अलावा आपने मेरे इन सच्चे और ईमानदार मित्र के

प्रति भी अन्याय किया है, जो केवल इस झगड़े की वजह से रुक गये; नहीं तो आज जहाज़ से रवाना हो चुके होते। मैंने आपको यह जंज़ीर दी थी, क्या आप इस बात को झुठा सकते हैं ?

सा० का एन्टीफोलस : अवश्य मैंने आपसे ली थी, और कभी इस बात को नहीं झुठाया।

व्यापारी : हाँ, तुमने यह जंज़ीर लेकर फिर इसके बारे में झुठाया था।

सा० का एन्टीफोलस : किसने सुना मुझे झुठाते हुए ?

व्यापारी : मेरे इन कानों ने, जिनको तुम जानते हो, सुना है। धिक्कार है तुम्हारे ऊपर ओ झूठे दुष्ट आदमी ! खेद का विषय है कि तुम उस स्थान पर रहते हो, जहाँ ईमानदार आदमियों के रहने की जगह है।

सा० का एन्टीफोलस : तू कोई बदमाश है, जो मुझपर इस तरह का दोषारोपण करता है। अगर तुझमें मुझसे लड़ने की हिम्मत है तो मैं अभी अपने सम्मान और सचाई का सबूत दिये देता हूँ।

व्यापारी : मैं इतनी हिम्मत रखता हूँ और तुझे बदमाश समझकर तेरा सामना करता हूँ।

[**वे तलवार खींच लेते हैं। उसी समय एड्रियाना, ल्यूसियाना वारवनिता तथा अन्यों का प्रवेश**]

एड्रियाना : ठहरो, भगवान के लिये उन्हें मत मारो। वे तो पागल हैं! कोई उनको पकड़ लो और उनकी तलवार छीन लो। ड्रोमियो को भी बाँध लो और उनको घर की तरफ बाँधकर ले चलो।

सा० का ड्रोमियो : स्वामी ! भागिये, भगवान् के लिये भागकर किसी मकान में छिप जाइये। यह कोई 'प्रॉयरी'[1] लगता है, चलो अन्दर

---

१. Priory : ईसाइयों का कॉन्वेन्ट अर्थात् एक प्रकार का मठ।

नहीं तो समझ लो बरबाद हो गये।

[सा० का एन्टीफोलस और सा० का ड्रोमियो दोनों उस प्रॉयरी के अन्दर चले जाते हैं। पुजारिन का प्रवेश]

पुजारिन : शान्ति रखो प्राणियो, यह भीड़ बनाकर तुम किस कारण से इधर आये हो ?

एड्रियाना : यहाँ से अपने पागल दुःखी पति को ले जाने के लिये। चलो अन्दर चलो। उनको कसकर बाँध लें और फिर चिकित्सा के लिये उनको घर ले चलें।

सुनार : मैं जानता था कि उनका दिमाग ठीक नहीं था।

व्यापारी : अब मुझे दुःख हो रहा है कि मैंने उसपर अपनी तलवार उठाई।

पुजारिन : कितने समय से यह मनुष्य इसी तरह से पागल है ?

एड्रियाना : इस हफ़्ते इनका दिमाग ठीक नहीं रहा। बहुत परेशानी रही और जैसे ये थे, उससे इनकी अवस्था बहुत बदल गई, लेकिन आज दोपहर तक तो कभी भी इनको इतना क्रोधावेश नहीं आया था।

पुजारिन : क्या कहीं समुद्री तूफ़ान के कारण जहाज़ डूबने से इनकी बहुत बड़ी अर्थ-क्षति तो नहीं हुई है ? या इनका कोई परम प्रिय मित्र तो इस संसार से नहीं उठ गया ? या किसी पराई स्त्री के प्रति तो इनका अवैध प्रेम नहीं है ? नवयुवकों में यह पाप अधिकतर पाया जाता है। वे किसी तरह के नैतिक बन्धनों का विचार न करते हुए स्वतंत्रतापूर्वक परिस्थितियों को देखते हैं। बताओ, कौन-सा इनका दुःख है जिसके कारण इनकी यह अवस्था बनी हुई है ?

एड्रियाना : इनमें से तो कोई भी नहीं है। हाँ, अन्तिम कारण सम्भव

हो सकता है, कि किसी स्त्री के प्रति इनका आकर्षण हो; जिस कारण ये प्रायः घर के बाहर रहते हैं।

पुजारिन : उसके लिये तो आपको इन्हें डाँटना चाहिये था।

एड्रियाना : जी, मैंने ऐसा ही किया था।

पुजारिन : हाँ-हाँ, लेकिन बुरी तरह नहीं डाँटा होगा।

एड्रियाना : जिस बुरी तरह मैं अपने स्वभाव के अनुसार डाँट सकती थी, उतना मैंने किया।

पुजारिन : शायद, अकेले में ?

एड्रियाना : जी नहीं, समुदाय के बीच में भी।

पुजारिन : नहीं-नहीं, इतना ही पर्याप्त नहीं था।

एड्रियाना : हमारी बातों का यही विषय रहा। सोते हुए भी मैंने इसीको जारी रखा, जहाज़ पर खाना खाने के वक्त भी मैंने यही बात कहकर उनको डाँटा। अकेले में, यही मेरी बातचीत का विषय बना रहा और समुदाय के बीच में भी मैंने यही किया। अभी तक मैंने उनसे यही कहा कि यह बहुत बुरी बात है।

पुजारिन : और इसका परिणाम यह निकला कि वह मनुष्य पागल हो गया। एक ईर्ष्यालु स्त्री की जली-कटी विषैली बातें एक कुत्ते के दाँत से भी अधिक घातक विष भरी होती हैं। तुम्हारे इस तरह डाँटने-फटकारने से उसकी नींद निरन्तर बिगड़ती रही और परिणाम यह हुआ कि उसका दिमाग खराब हो गया। तुम कहती हो कि खाने के वक्त भी तुमने अपनी बातों से उसका खाना हराम कर दिया। अशान्ति के बीच जो खाना खाया जाता है, उससे पाचन क्रिया बिगड़ जाती है; उसीसे तेज बुखार हो जाता है और बुखार होता क्या है ? यही पागलपन का दौरा ही तो होता है। तुम कहती हो कि तुमने अपनी जली-कटी

बातों से उसके मनोरंजन और सुख-चैन में निरन्तर बाधा डाली है। जानती हो, जब मनोरंजन में बाधा उपस्थित हो जाती है तो उसके परिणामस्वरूप चित्त भ्रमित और विक्षिप्त-सा हो जाता है ? यह अवस्था सदा चिन्ता में रखने वाली निराशा और दुःख के निकट की अवस्था है और बस, इसीके साथ तो अनेक रोग पैदा हो जाते हैं, जिससे मनुष्य का चेहरा पीला पड़ जाता है। ये सभी रोग जीवन के शत्रु हैं । खाते, खेलते और आराम करते समय यदि मनुष्य को निरन्तर परेशान किया जाय तो उससे या तो मनुष्य पागल हो जाता है या एक जंगली जानवर। परिणाम यह निकला कि तुम्हारी इन ईर्ष्यालु बातों ने तुम्हारे पति को पागल कर दिया ।

ल्यूसियाना : देखिये, जब इनके पति ने स्वयं इनके साथ कठोर पशुओं का-सा क्रूर और नीच व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया था, तब इन्होंने उनको बड़े ही नम्र स्वर में झिड़का था।

तुम उत्तर क्यों नहीं देती हो इन सभी बातों का, जो तुम्हारे बारे में कही जा रही हैं ?

एड्रियाना : उन्होंने मुझसे मेरा अपराध स्वीकार करवा लिया है। श्रेष्ठ व्यक्तियो ! आओ और उनको पकड़ लो।

पुजारिन : नहीं, मेरे घर के भीतर एक भी व्यक्ति नहीं घुसना चाहिये।

एड्रियाना : तो फिर आप अपने सेवकों के द्वारा ही मेरे पति को यहाँ से निकलवा दीजिये ।

पुजारिन : यह भी नहीं हो सकता। इस स्थान को एक पवित्र देवालय समझ कर यह व्यक्ति यहाँ आ गया है और जब तक मैं फिर इसकी स्वाभाविक चेतना को न लौटा लाऊँ, या इस पागलपन

को मिटाने में हार न जाऊँ तब तक तुम कोई भी इसको यहाँ से नहीं ले जा सकते ।

एड्रियाना : मैं अपने पति की देख-भाल करूँगी । बीमारी की अवस्था में इनके खाने-पीने का प्रबन्ध करूँगी, क्योंकि यह मेरा कर्तव्य है । मेरे सिवाय और कोई भी इनकी देख-भाल के लिये नहीं रहेगा, इसलिये कहती हूँ कि मुझे इन्हें घर ले जाने दीजिये ।

पुजारिन : धैर्य रखिये, मैं इनको यहाँ से हिलने नहीं दूँगी, जब तक कि मैं अपनी औषधियों, शरबत तथा प्रार्थनाओं आदि जितने भी साधन मेरे पास हैं, उनके द्वारा इनको अपनी पूर्व स्वाभाविक स्थिति में न ले आऊँ । मेरा यह धार्मिक कर्तव्य है और मेरे जीवन की पवित्र शपथ है । इसीलिये कहती हूँ, सभी लोग चले जाइये और उनको यहाँ मेरे पास छोड़ जाइये ।

एड्रियाना : मैं अपने पति को यहाँ छोड़कर यहाँ से नहीं जा सकती । क्या आप इतनी पवित्र होकर भी पति-पत्नी को अलग कराने का दूषित कार्य नहीं कर रही हैं ?

पुजारिन : चुप रहो और यहाँ से चली जाओ ! तुमको वे नहीं मिल सकते !

[प्रस्थान]

ल्यूसियाना : इस धृष्टता की शिकायत ड्यूक के पास पहुँचा दो ।

एड्रियाना : आओ चलें, मैं उनके पैरों पर लेट जाऊँगी और तब तक नहीं उठूँगी जब तक मेरे आँसू और मेरी प्रार्थनाओं से द्रवित होकर वे स्वयं मेरे साथ यहाँ आने को राजी नहीं हो जायेंगे और इस पुजारिन से अपनी शक्ति के द्वारा मेरे पति को नहीं छुड़ा लेंगे ।

व्यापारी : मेरे खयाल से पाँच बज गये होंगे । ड्यूक स्वयं ही उस दर्दनाक घाटी की तरफ शीघ्र आ रहे हैं, इस मठ की खाइयों

के पीछे जहाँ एक को मृत्यु-दण्ड दिया जाने वाला है।

सुनार : किस कारण से ?

व्यापारी : एक सायरेक्यूसा-निवासी सम्मानित व्यापारी को, जो इस नगर के नियमों के विरुद्ध दुर्भाग्यग्रस्त होकर इस खाड़ी में आ गया था, इस दण्ड के बदले मृत्यु-दण्ड दिलवाने।

सुनार : देखो, वे आ रहे हैं। हम भी उसकी मृत्यु के इस दृश्य को देखेंगे।

ल्यूसियाना : ड्यूक मठ के सामने से गुजर कर जायें, उससे पहले ही उनके सामने घुटने टेककर बैठ जाना।

[इफीसस के ड्यूक और सायरेक्यूसा के व्यापारी का ईजियन के जल्लाद तथा अन्य अधिकारियों के साथ प्रवेश]

ड्यूक : फिर भी एक बार उसकी घोषणा करवा दो कि अगर इनका कोई मित्र इनके लिये पूरी रकम भर दे तो इनको मृत्यु-दण्ड नहीं दिया जायेगा। इतनी करुणा हम इनके प्रति दिखाते हैं।

एड्रियाना : पवित्र ड्यूक ! इस पुजारिन के विरुद्ध मेरा न्याय करिये।

ड्यूक : पुजारिन तो बड़ी पवित्र और सम्मानित महिला हैं। यह नहीं हो सकता कि उन्होंने तुम्हें किसी प्रकार की हानि पहुँचाई हो।

एड्रियाना : महान ड्यूक ! मेरी प्रार्थना सुनिये, मेरे पति एन्टीफोलस, जिनको आपकी ही आज्ञा से मैंने अपना और अपनी सारी सम्पत्ति का स्वामी स्वीकार किया, आज इस अभागे दिन पूरी तरह पागल हो गये हैं। वे बुरी तरह आवेश में आकर गली में से होकर भागे और उनके साथ उनका सेवक भी; सभी पागल होकर भागे और नागरिकों को तंग करने लगे। उनके घरों में घुसकर वहाँ से अँगूठी, जवाहरात और उस आवेश में जो भी उन्हें अच्छा लगा, ले आये। एक बार मैंने उनको बँधवा-

कर घर भिजवा भी दिया था और मैं जो कुछ भी नुकसान उन्होंने अपने आवेश में कर दिया था उसके बारे में पूछने के लिये गयी थी कि मैं नहीं जानती कि कैसे बलपूर्वक वे उन लोगों के बीच से छूट आये, जिन्होंने उनको बाँध रखा था और जो उनकी देख-भाल कर रहे थे। वे और उनका पागल सेवक दोनों क्रोधावेश में नंगी तलवारें लिये फिर हमें मिले और फिर बुरी तरह से हमारा पीछा करने लगे। इसके बाद ज़्यादा आदमी बुलाकर हम फिर उनको बाँधने के लिये आये तब वे इस मठ के भीतर भाग गये। इधर हमने उनका पीछा करना चाहा लेकिन पुजारिन ने हमारे लिये मठ के दरवाजे बन्द कर दिये हैं और न तो ये हमें घुसकर उन्हें लाने देती हैं और न उनको यहाँ से हमारे साथ भेजती हैं, जिससे हम उन्हें घर ले जा सकें। इसलिये हे परम दयालु ड्यूक ! आप आज्ञा देकर उनको यहाँ बुलवा लीजिये, जिससे हम उन्हें चिकित्सा आदि के लिये यहाँ से ले जा सकें।

ड्यूक : बहुत दिनों पहले तुम्हारे पति ने युद्धों में हमारा साथ दिया और मैंने उस समय एक राजकुमार की दृष्टि से तुम्हें आज्ञा दी थी। तब तुमने उसको अपना स्वामी बनाया था और उसके प्रति उसी प्रकार का प्रेम और सौहार्द्र दिखाया था, जितना मैं दिखा सकता था।

जाओ, तुममें से कोई, मठ के दरवाजे को खटखटा दो और पुजारिन को मेरे पास आने के लिये कहो। मैं यहाँ से जाने के पहले इसका निर्णय करूँगा।

[एक संदेशवाहक का प्रवेश]

संदेशवाहक : श्रीमती, श्रीमती, भागिये और बचाइये अपने आपको।

मेरे स्वामी और उनका आदमी दोनों ही छूटकर भाग निकले हैं। उन्होंने रास्ते की औरतों को पीटा है और तान्त्रिक को बाँध दिया है। उसकी दाढ़ी को उन्होंने आग लगाकर जला दिया है। आग जितनी बढ़ती थी, उतना ही वे प्याले भर-भरकर कीचड़ उसके बालों को बुझाने के लिये फेंकते थे। मेरे स्वामी उसको धैर्य का उपदेश भी दे रहे हैं और उसी बीच में उनका आदमी बेवकूफ की तरह कैंची लेकर उसके बाल काट रहा है। सच, अगर आपने अभी किसी तरह की सहायता नहीं भेजी, तो वे दोनों उस तान्त्रिक को मार डालेंगे।

एड्रियाना : चुप रहो बेवकूफ ! तुम्हारे स्वामी और उसका आदमी दोनों यहीं पर हैं और जो कुछ भी तुम हमसे कह रहे हो, वह झूठ है।

संदेशवाहक : स्वामिनी ! मैं अपनी शपथ खाकर कहता हूँ, मैं ठीक कह रहा हूँ। जब से मैंने इस दृश्य को देखा है, तब से साँस भी नहीं ली है मैंने। वे तो बस आपके लिये पुकार रहे हैं और शपथ खाकर कह रहे हैं कि अगर आप मिल जायँ तो वे आपके चेहरे पर चाकू के निशान बनाकर आपकी शक्ल बिगाड़ दें।

[अन्दर चिल्लाने की आवाज़]

सुनिये-सुनिये स्वामिनी ! मैं उन्हींकी आवाज़ सुन रहा हूँ। भाग जाइये यहाँ से।

ड्यूक : आओ, मेरे पास खड़ी हो जाओ। डरो मत किसी बात से। भालों को लेकर सन्नद्ध खड़े हो जाओ और हिफाजत करो।

एड्रियाना : सच, ये तो मेरे पति हैं। आप देख लीजिये। अदृश्य रूप से ही ये इधर-उधर विचरण करते हैं। अभी-अभी हमने यहाँ इस मठ के भीतर उनको बन्द किया था और अभी वे वहाँ हैं।

सच, यह तो पूरी तरह समझ के परे की बात है।

[इफी० के एन्टीफोलस का इफी० के ड्रोमियो के साथ प्रवेश]

इफी० का एन्टीफोलस : न्याय करिये दयालु ड्यूक ! न्याय करिये मेरा ! उस सेवा का ही स्मरण करके मुझे न्याय दीजिये जबकि बहुत दिनों पहले युद्ध-भूमि में आपको गिरा देखकर मैं आपका जीवन बचाने के लिये आपके शरीर पर झुककर खड़ा हो गया था और उस समय गहरे घाव मेरे शरीर पर लगे थे। उस रक्त के लिये ही, जिसे मैंने आपके लिये बहाया है, मुझे न्याय दीजिये।

ईजियन : यदि मृत्यु का भय मुझे पागल नहीं बनाये हुए है तो निस्संदेह मैं अपने पुत्र एन्टीफोलस और ड्रोमियो को देख रहा हूँ।

इफी० एन्टीफोलस : श्रेष्ठ ड्यूक ! इस औरत के विरुद्ध मुझे न्याय दीजिये। यह वही औरत है, जिसे आपने मेरी पत्नी बनवाया था, इसीने मेरा तिरस्कार करके मुझे अपमानित किया है और वह भी बहुत ही बुरी तरह से। इस निर्लज्ज ने जैसा अपराध मेरे प्रति आज किया है, इसकी मैं कभी कल्पना ही नहीं कर सकता था।

ड्यूक : बताओ कैसे ? मै तुम्हारे प्रति न्याय करूँगा।

इफी० एन्टीफोलस : महान् ड्यूक ! आज ही इसने मेरे लिये घर के दरवाजे बन्द कर लिये। उस बीच आवारा दोस्तों के साथ इसने दावतें उड़ाईं।

ड्यूक : बहुत बड़ा अपराध है ! बोलो स्त्री ! क्या तुमने ऐसा किया ?

एड्रियाना : जी नहीं, मेरे श्रेष्ठ स्वामी ! आज खाना खाने के वक्त मैं, मेरी बहिन और ये हम तीनों ही साथ थे। मैं अपनी आत्मा की शपथ खाकर कहती हूँ कि जो कुछ भी दोषारोपण ये मेरे ऊपर कर रहे हैं, वह सब झूठा है।

ल्यूसियाना : महान् ड्यूक ! वह आपसे ठीक कह रही है । यदि ऐसा न हो, तो मैं कभी भी दिन का प्रकाश न देख पाऊँ और न कभी रात को सो पाऊँ ।

सुनार : ओ विश्वासघाती स्त्री ! ये दोनों ही विश्वासघाती हैं । इस मामले में वह पागल आदमी उनके साथ उचित ही व्यवहार करता है ।

इफी० का एन्टीफोलस : मेरे स्वामी ! जो कुछ मैं कह रहा हूँ, वह पूरी तरह सोच-समझकर ही कह रहा हूँ । मेरे दिमाग पर न तो शराब के नशे का असर है और न किसी क्रोधावेश के कारण मैं इस तरह भाग रहा हूँ; यद्यपि मेरे प्रति अन्याय तो इतना किया गया है कि मुझसे अधिक अक्लमंद आदमी भी उससे पागल हो सकता है । ये स्वर्णकार यदि इस स्त्री के साथ समझौता नहीं किये होते तो इस बात की साक्षी वे सकते थे, क्योंकि ये मेरे साथ उस समय वहाँ थे और वहीं ये मुझसे 'पौर्पेन्टाइन' पर जंजीर लाने का वायदा करके जुदा हो गये थे । उसी जगह जहाँ बैल्थेजर और मैंने खाना खाया था । जब हम खाना खा चुके और ये उधर नहीं आये तो मैं इनको खोजने के लिये निकला । रास्ते में मैं इनको मिल गया और इन्हींके साथ ये सज्जन मिले । वहाँ ये स्वर्णकार स्वयं विश्वासघाती होते हुए भी मुझे विश्वासघाती कहने लगे, कि इन्होंने आज मुझे यह जंजीर दी थी । भगवान जानता है, मैंने तो उसको देखा भी नहीं । उसीके लिये इन्होंने मुझे इन अधिकारी महोदय के हवाले कर दिया । मुझे इनकी आज्ञा माननी पड़ी, लेकिन उसी समय मैंने अपने सेवक को घर कुछ ड्यूकैट लेने के लिये भेजा । वह कुछ भी लेकर नहीं लौटा तब मैंने अधिकारी से कहा कि वे स्वयं मुझे मेरे घर ले चलें ।

अकस्मात् ही मेरी पत्नी, उसकी बहिन और उनके साथ इन बदमाशों का एक झुंड हमें रास्ते में मिल गया। अपने साथ वे एक सूखे-से भूखे बदमाश को भी लाये थे। उसका नाम पिंच था। बिलकुल अस्थिपिञ्जर था और बनता था एक आला डॉक्टर। तान्त्रिक, ज्योतिषी और बुरी हालत का जादूगर भी था वह। बिलकुल भूखा, धँसी हुई आँखें और बड़ा खिंचा हुआ देखने वाला था। वह तो एक जिन्दा मुर्दा था। यह घृणित और दूसरों को नुकसान पहुँचाने वाला गुलाम अपने आपको एक तान्त्रिक समझने लगा और पहले मेरी आँखों की तरफ घूरकर देखता हुआ मेरी नब्ज देखने लगा और मेरे सामने कुछ खोया-खोया-सा बैठा रहा, फिर पुकारने लगा कि मैं पागल हो गया हूँ। तब तो वे सब मेरी ओर झपटे और उन्होंने कसकर मुझे बाँध लिया और वहाँ से ले जाकर घर के एक अँधेरे सीलभरे कमरे में उसी तरह मुझे और मेरे आदमी को बन्द कर दिया। उसके बाद किसीने हमें नहीं खोला, यहाँ तक कि मैंने अपने दाँतों से रस्सी को कुतरकर अपने आपको स्वतन्त्र किया है और तभी फौरन मैं वहाँ से भागकर इधर आपके पास आया हूँ। हे श्रेष्ठ ड्यूक ! जैसा अन्याय मेरे प्रति हुआ है और जिस प्रकार की धृष्टता दिखाकर मेरा अपमान किया गया है, उसका आप न्याय करके मुझे संतोष प्रदान करिये, बस यही मेरी प्रार्थना है।

सुनार : मेरे स्वामी ! इतना तो मैं साक्षी देता हूँ कि इनके लिये घर के दरवाजे बन्द कर लिये गये थे और इसी कारण ये घर पर खाना नहीं खा पाये थे।

ड्यूक : लेकिन यह बताओ, क्या तुमने इनको वह जंजीर दी थी ?

सुनार : अवश्य स्वामी ! जब ये इधर भागकर आये थे, तब लोगों

ने इनकी गरदन में उस जंजीर को देखा था।

दूसरा व्यापारी : इसके अलावा, मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने अपने कानों से आपको यह स्वीकार करते हुए सुना है कि आपने जंजीर इनसे प्राप्त की। इससे पहले आप बाजार में इस बात को झुठा चुके थे। इसी बात पर तो मैंने आप पर अपनी तलवार उठाई थी, तब आप इस मठ के भीतर भाग गये थे। अवश्य किसी दैवी आश्चर्य से आप वहाँ से निकल आये हैं।

फी० का एन्टीफोलस : मैं तो कभी इस मठ के भीतर नहीं घुसा और न कभी आपने मेरे ऊपर तलवार उठाई। मैंने उस जंजीर को कभी नहीं देखा। हे ईश्वर, मेरी सहायता करना। आप जो कुछ भी दोषारोपण मेरे ऊपर लगा रहे हैं, वह सब झूठ है।

ड्यूक : यह कैसा दोषारोपण है ? मेरे विचार से तुम सभी सिर्से का प्याला[1] पी कर आये हो। अगर तुमने इसको वहाँ बन्द किया था तो यह यहाँ होता ? अगर यह पागल होता तो इतने ठंडे तरीके से बातें नहीं करता। तुम कहते हो कि इसने घर पर खाया, लेकिन स्वर्णकार इस बात का खण्डन करता है। क्यों तुम्हें क्या कहना है सेवक !

इफी० का ड्रोमियो : श्रीमान् ! इन्होंने पौर्पेन्टाइन पर इनके साथ खाना खाया था।

वारवनिता : सच बात है और मेरी उँगली से वह अँगूठी छीन ली थी।

इफी० का एन्टीफोलस : मेरे स्वामी ! मैंने इनसे अँगूठी ली थी, यह बात सच है।

ड्यूक : क्या तुमने इनको इस मठ में घुसते हुए देखा था ?

---

१. Circe's cup: **सिर्से एक जादूगरनी थी, जिसने अपने चाहने वालों को जादुई शराब पिलाकर जानवर बना दिया था।**

वारवनिता : जी हाँ स्वामी ! निस्सन्देह देखा था।

ड्यूक : बड़ी विचित्र बात है। जाओ, पुजारिन को यहाँ बुलाकर ले आओ। मेरे विचार से तुम सभी भटके हुए निरे पागल मनुष्य हो।

[**एक व्यक्ति पुजारिन को बुलाने जाता है।**]

ईजियन : परम शक्तिवान् ड्यूक ? मुझे कुछ कहने की आज्ञा प्रदान करिये। मुझे आशा है, मेरा एक मित्र पर्याप्त धन देकर मेरे जीवन को बचा लेगा।

ड्यूक : हाँ, हाँ सायरेक्यूसा-निवासी ! निश्चित होकर बोलो, तुम क्या चाहते हो।

ईजियन : श्रीमान् ! क्या आपका नाम एन्टीफोलस नहीं है और क्या आपका यह दास ड्रोमियो के नाम से नहीं जाना जाता है ?

इफी० का ड्रोमियो : जी हाँ श्रीमान् ! इस एक घण्टे के भीतर तो मैं रस्सी का दास था, लेकिन धन्यवाद देता हूँ इनको कि इन्होंने कुतरकर मेरी रस्सी के दो टुकड़े कर दिये और अब मैं इनका दास, लेकिन वैसे स्वतन्त्र ड्रोमियो नाम का व्यक्ति हूँ।

ईजियन : मुझे विश्वास है कि तुम दोनों को मेरी याद होगी।

इफी० का ड्रोमियो : जी हाँ श्रीमान्। आपकी परिस्थिति के द्वारा हमें अपने आपकी पूरी याद है, क्योंकि जिस प्रकार आप बँधे हुए हैं, उसी प्रकार कुछ देर पहले हम भी बँधे हुए थे। आप उस पिंच के मरीज़ तो नहीं हैं न श्रीमान् ?

ईजियन : तुम विचित्र अपरिचित-सी दृष्टि से मेरी ओर क्यों देखते हो ? मुझे तो तुम अच्छी तरह जानते हो।

इफी० का एन्टीफोलस : मैंने अपने पूरे जीवन भर अब तक आपको कभी भी नहीं देखा।

ईजियन : ओह ! पिछली बार जब तुमने मुझे देखा था, उस समय से

दुःख ने मुझे पूरी तरह बदल दिया है और इस चिन्तायुक्त समय के बीच काल के कुरूप हाथों ने मेरे चेहरे पर विचित्र कुरूपताएँ भर दी हैं; लेकिन फिर भी बताओ, क्या तुम मेरी आवाज़ को भी नहीं पहचानते हो ?

इफी० का एन्टीफोलस : नहीं।

ईजियन : ड्रोमियो, तुम भी नहीं ?

इफी० का ड्रोमियो : विश्वास करिये श्रीमान् ! मैं भी नहीं पहचानता।

ईजियन : मुझे विश्वास है, तुम पहचानते हो।

इफी० का ड्रोमियो : लेकिन श्रीमान्, मेरा तो विश्वास है कि मैं नहीं पहचानता और अगर एक आदमी किसी बात के लिये मना करे तो आपको उसकी बात पर विश्वास कर लेना चाहिये।

ईजियन : मेरी आवाज़ नहीं जानते हो ? ओह, दुर्भाग्य ! क्या तूने इस सात वर्ष की छोटी-सी अवधि के भीतर ही इस तरह मेरे इस दीन स्वर को विकृत और खण्डित कर दिया है कि यहाँ मेरा स्वयं का पुत्र ही दबी हुई गहन चिन्ताओं के प्रकट करने के इस क्षीण साधन मेरे स्वर को नहीं पहचानता ? यद्यपि अब मेरा यह झुर्रियों से भरा हुआ चेहरा शीत की उस गिरती बरफ के नीचे छिप जाये जो अन्न-रस को नष्ट कर देती है, फिर भी मेरे जीवन की रात्रि की कुछ स्मृतियाँ हैं। मेरे जीवन के बुझते हुए दीपकों में अभी मन्द प्रकाश बाकी है। मेरे इन बहरे और शिथिल कानों में अब भी थोड़ी सुनने की शक्ति बाकी है। ये सभी मेरे पुराने साक्षी हैं, मैं किसी प्रकार भूल नहीं कर सकता। मुझसे कह दो कि तुम मेरे ही पुत्र एन्टीफोलस हो।

इफी० का एन्टीफोलस : मैंने तो अपने जीवन में अपने पिता को कभी नहीं देखा।

ईजियन : सात साल पहले बेटा, सायरेक्यूसा में तुम जानते हो, हम एक दूसरे से अलग हो गये थे, लेकिन हो सकता है बेटा, मेरी इस बुरी हालत में तुम्हें मुझे अपना पिता स्वीकार करते हुए लज्जा हो रही हो।

इफी० का एन्टीफोलस : ड्यूक, और जितने भी लोग मुझे इस नगर में जानते हैं, सभी इसको साक्षी दे सकते हैं कि यह बात सत्य नहीं है। मैंने अपने जीवन में कभी भी सायरेक्यूसा को नहीं देखा।

ड्यूक : मैं तुम्हें बताता हूँ सायरेक्यूसा-निवासी, कि बीस साल से एन्टीफोलस यहीं मेरे संरक्षण में रह रहा है। इस बीच तो कभी भी उसने सायरेक्यूसा को नहीं देखा। मुझे लगता है तुम्हारी आयु और जीवन के भय ने तुम्हारे चित्त को भ्रम में डाल दिया है।

[सायरेक्यूसा के एन्टीफोलस तथा सा० के ड्रोमियो के साथ पुजारिन का प्रवेश]

पुजारिन : परम शक्तिवान् ड्यूक ! देखिये, इस व्यक्ति के प्रति बड़ा अन्याय हुआ है।

[सभी उन्हें देखने के लिये इकट्ठे हो जाते हैं।]

एड्रियाना : मैं दो पतियों को यहाँ उपस्थित देख रही हूँ, या यह कहूँ कि मेरी आँखें मुझे धोखा दे रही हैं !

ड्यूक : इनमें से एक आदमी अवश्य दूसरे की संरक्षक आत्मा है। पता नहीं, इनमें से कौन-सा तो स्वाभाविक मनुष्य है और कौन संरक्षक आत्मा है। कौन पहचान सकता है उन्हें ?

सा० का ड्रोमियो : श्रीमान्, मैं हूँ असली ड्रोमियो, इसको यहाँ से भगा दीजिये।

इफी० का ड्रोमियो : नहीं श्रीमान्! असली ड्रोमियो तो मैं हूँ, मुझे यहाँ ठहरने की आज्ञा दीजिये।

सा० का एन्टीफोलस : क्या तुम ईजियन नहीं हो? या उसकी भूतात्मा हो?

सा० का ड्रोमियो : ओह, मेरे वृद्ध स्वामी! आपको यहाँ किसने बन्दी बनाया है?

पुजारिन : किसी ने भी बन्दी बनाया है, मैं इनके बन्धन खोल देती हूँ और इस तरह इनको मुक्त करके अपना पति प्राप्त करती हूँ। वृद्ध ईजियन, क्या तुम्हीं वह हो, जिसकी इमीलिया नाम की एक पत्नी थी, जिसने दो सुन्दर पुत्रों को जन्म दिया था?
ओह, अगर तुम्हीं वह ईजियन हो तो बोलो, अपनी उसी इमीलिया से कुछ बोलो।

ड्यूक : इसकी सुबह की कहानी यहाँ ठीक शुरू होती है। ये दोनों एन्टीफोलस शक्ल से एक-से ही हैं और ये ड्रोमियो भी बिलकुल एक दूसरे से मिलते हुए हैं। इसके अलावा इस स्त्री ने भी समुद्री दुर्घटना की बात दुहराई थी। निश्चित ही ये दोनों इन पुत्रों के माँ-बाप हैं, जो अकस्मात् ही यहाँ आकर एक दूसरे से मिल गये हैं।

ईजियन : अगर मैं स्वप्न नहीं देख रहा हूँ तो तुम्हीं इमीलिया हो। अगर तुम यहीं हो तो बताओ, वह पुत्र कहाँ है, जो तुम्हारे साथ उस पतवार में बँधा हुआ बह गया था।

पुजारिन : ईपीडैमियम के लोगों ने उसको, मुझको और एक ड्रोमियो इन सबको निकाल लिया था, लेकिन फिर कोरिंथ के वेक्रूर मछुए

बलपूर्वक ड्रोमियो और मेरे पुत्र को उनसे छीनकर ले गये। सिर्फ मुझे उन्होंने ईपोडैमियम के लोगों के पास छोड़ दिया। उसके बाद उनका क्या हुआ, मैं नहीं कह सकती। जिस परिस्थिति में तुम मुझे देख रहे हो, भाग्य ने मुझे यहाँ ला पटका।

ड्यूक : एन्टीफोलस, तुम पहले पहल कोरिंथ से आये थे ?

सा० का एन्टीफोलस : जी नहीं श्रीमान्! मैं नहीं। मैं तो सायरेक्यूसा से आया था।

ड्यूक : ठहरो, अलग-अलग खड़े हो जाओ। मुझे तो कुछ मालूम ही नहीं होता कि कौन-कौन है।

इफी० का एन्टीफोलस : परम दयालु स्वामी! मैं कोरिंथ से आया था।

इफी० का ड्रोमियो : मैं भी इन्हीं के साथ आया था।

इफी० का एन्टीफोलस : आपके परम प्रसिद्ध योद्धा चाचा ड्यूक मेनेफॉन ही हमें इस नगर में लाये थे।

एड्रियाना : आपमें से किसने मेरे साथ आज खाना खाया था ?

सा० का एन्टीफोलस : मैंने, श्रीमती।

एड्रियाना : तो क्या आप मेरे पति नहीं हैं ?

इफी० का एन्टीफोलस : नहीं, मैं कहता हूँ, यह नहीं है ?

सा० का एन्टीफोलस : मैं भी यही कहता हूँ, फिर भी इन्होंने मुझे पति कहकर पुकारा और इस सुन्दरी ने, जो इनकी बहिन है, मुझे भाई कहकर पुकारा। जो कुछ मैंने आपसे उस समय कहा था, मुझे आशा है कि यदि कोई स्वप्न नहीं है, तो मैं उसको सत्य प्रमाणित करके बताऊँगा।

सुनार : वह जंज़ीर है श्रीमान्, जिसे आपने मुझसे लिया था।

सा० का एन्टीफोलस : मैं भी यही कहता हूँ श्रीमान्, मैं मना नहीं करता।

इफी० का एन्टीफोलस : आपने श्रीमान्, इस जंजीर के लिये मुझे गिरफ़्तार करा दिया था।

सुनार : जी हाँ, मैंने यही किया था; मैं मना नहीं करता श्रीमान्।

एड्रियाना : मैंने ड्रोमियो के हाथों आपकी जमानत देने के लिये रकम भिजवाई थी, लेकिन मेरे विचार से वह उसको नहीं लाया।

इफी० का ड्रोमियो : जी नहीं, मेरे हाथों कोई रकम नहीं भिजवाई थी आपने।

सा० का एन्टीफोलस : आपके पास से मुझे ड्यूकेट भरा हुआ यह बटुआ मिला था और मेरा आदमी ड्रोमियो इसे मेरे पास लाया था। अब मुझे पता चला कि हम एक दूसरे के आदमी से भी मिल जाते थे। उस समय मेरे वेश में उसके होने की धारणा होती थी और इसी प्रकार इसके साथ होता था, यही तो कारण है इन सभी भूलों का है।

इफी० का एन्टीफोलस : मैं अपने पिता के लिये इस ड्यूकेट की जमानत देता हूँ।

ड्यूक : इसकी आवश्यकता नहीं, तुम्हारे पिता को जीवन-दान मिलता है।

वारवनिता : श्रीमान्, आपसे मुझे वह हीरा मिलना चाहिये।

इफी० का एन्टीफोलस : यह लो, और मेरे अच्छे मनोविनोद के लिये मैं तुम्हें बहुत धन्यवाद देता हूँ।

पुजारिन : ख्यातिमान्य ड्यूक ! हमारे साथ इस मठ के भीतर चलने का कष्ट करिये और विस्तार से हमारे भाग्य की कहानी सुनिये; उन सभी की, जो इस स्थान पर उपस्थित हैं कि इस एक दिन की भूल के कारण किस तरह सभी ने बराबर की आपत्ति सही है। चलिये, हमारे साथ चलिये, और हम आपकी उत्सुकता को शान्त

कर देंगे। तैंतीस वर्षों तक मैं तुम्हारे लिये मेरे पुत्रों! अथक परिश्रम करती हुई तुम्हें ढूंढती रही, लेकिन अभी तक मेरे हृदय पर पड़ा हुआ दुःख का भार किसी तरह कम नहीं हुआ। ड्यूक, मेरे पति, दोनों पुत्रो और तुम दोनों ड्रोमियो, जो उनकी जन्म-तिथि के प्रमाण हो, चलो हम चलकर प्रेम की दावत करें। मेरे साथ चलो। इतने लम्बे दुःख के पश्चात् इस तरह आपस के मिलने का उत्सव मनायें।

ड्यूक : अपने हृदय से मैं इस उत्सव में भाग लूंगा।

[**सभी का प्रस्थान। दोनों ड्रोमियो और दोनों भाई रह जाते हैं।**]

सा० का ड्रोमियो : स्वामी! क्या मैं आपका सामान जहाज़ से वापस ले आऊँ?

इफी० का एन्टीफोलस : ड्रोमियो! मेरा क्या सामान तुमने जहाज़ पर लदवा दिया है?

सा० का ड्रोमियो : आपका वही सामान श्रीमान्, जो सेन्टोर में आप-के मेज़बान की देख-भाल में रखा था।

सा० का एन्टीफोलस : वह मुझसे कह रहा है। ड्रोमियो, मैं तुम्हारा स्वामी हूँ। चलो, उसके बारे में भी हम अभी देखेंगे। देखो वहाँ जाकर अपने भाई से गले मिलकर प्रसन्न हो जाओ।

[**सा० का एन्टीफोलस इफी० के एन्टीफोलस के साथ चला जाता है।**]

सा० का ड्रोमियो : तुम्हारे स्वामी के घर मेरा एक मोटा दोस्त है, जिसने तुम्हारे बदले खाने के वक्त रसोई में मुझसे काम लिया था। सच कहता हूँ, वह मेरी बहिन हो सकती है, पत्नी नहीं।

इफी० का ड्रोमियो : मैं सोचता हूँ, तुम तो मेरे दर्पण हो, भाई नहीं हो। मैं तुम्हारे द्वारा अपना रूप देखता हूँ। मैं कितना सुन्दर

नवयुवक हूँ। क्या तुम उसकी बातें सुनने अन्दर चलोगे ?

सा० का ड्रोमियो : मैं नहीं श्रीमान् ! तुम मुझसे बड़े हो।

इफी० का ड्रोमियो : बस, यही प्रश्न है कि कैसे हम इसका निर्णय करें।

सा० का ड्रोमियो : हम बड़े का निश्चय सिक्का उछालकर कर लेंगे, तब तक तो तुम ही पहले चलो।

इफी० का ड्रोमियो : तो फिर इस तरह हो :

आए थे हम इस दुनिया में
संग-संग बन भाई-भाई,
हाथ पकड़ कर चलें संग हम
पीछे आगे की न जुदाई।

[प्रस्थान]

शेक्सपियर [१५६४-१६१६] अंग्रेज़ी भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि और नाट्यकार माने जाते हैं। बहुत-से विद्वान् उन्हें यूरोपीय साहित्य का और कुछ उन्हें विश्व-साहित्य का महानतम कवि और नाटककार मानते हैं। इनकी कृतियाँ लगभग चालीस हैं। संसार के इस महान् साहित्यकार के नाटकों के हिन्दी रूपान्तर, अंग्रेज़ी और हिन्दी के अधिकारी एवं प्रतिभाशाली विद्वान् डा० रांगेय राघव ने प्रस्तुत किए हैं।

मूल्य : दो रुपये